R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में विज्ञापन बुक कराने हेतु सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

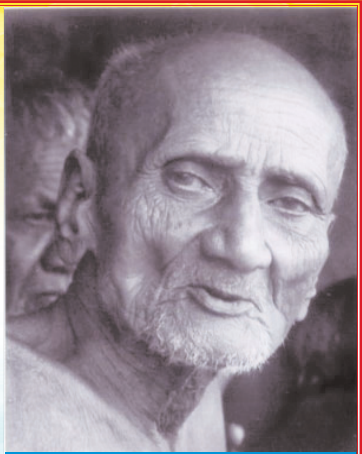
बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 31 अंक 19 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 10 मार्च 2025, वीर नि. संवत् 2551

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

सहज पथगामी ग्रंथ का हुआ भव्य विमोचन

उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह एवं विद्वानों ने अपने कर कमलों से किया विमोचन
देश के प्रमुख विद्वानों ने किया गुणानुवाद: प्रवर्तक मुनि श्री सहजसागर ने किया मैनपुरी को गौरवान्वित

सुनील जैन

मैनपुरी। मैनपुरी के श्री प्रसन्नसहज सभा मंडप में परम पूज्य अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में मैनपुरी नगर के गौरव प्रवर्तक मुनि श्री सहजसागर जी महाराज (गृहस्थ अवस्था के डॉ. सुशील जैन मैनपुरी) के जीवनवृत्त पर आधारित ग्रंथ 'सहज पथगामी' का भव्य विमोचन उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह के साथ ही आयोजन में पधारे देश प्रमुख विद्वान प्रोफेसर फूलचंद्र 'प्रेमी', वाराणसी, प्रोफेसर अशोककुमार जैन, वाराणसी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती', बुरहानपुर, एडवोकेट अनूपचंद्र जैन, फिरोजाबाद, डॉ. पंकज जैन, इंदौर, डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर, ग्रंथ के संपादक डॉ. कमलेश जैन, वाराणसी, डॉ. सौरभ जैन, मैनपुरी, डॉ. स्वाति जैन मैनपुरी, डॉ. सुशील जैन, कुरावली ने किया।

इस मौके पर विद्वानों ने मुनि श्री सहजसागर जी महाराज का गुणानुवाद करते हुए कहा कि मुनि श्री सहज सागर जी महाराज ने दिगम्बर मुनि दीक्षा लेकर मैनपुरी को गौरवान्वित किया है। वे श्रमण संस्कृति के दैदीप्यमान नक्षत्र के रूप में श्रमण परंपरा को गौरवान्वित कर रहे हैं। नगर गौरव मुनि श्री सहज सागर जी महाराज ने अपनी पीयूष देशना में मैनपुरी में बिताए अपने जीवन के बहुमूल्य पलों के अनेक संस्मरण सुनाकर उपस्थित सैकड़ों श्रद्धालुओं को भाव विभोर कर दिया।

इस मौके पर अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज ने कहा कि व्यक्ति का धन नहीं व्यक्ति के व्यवहार, उसकी वाणी को लोग याद रखते हैं। उन्होंने कहा कि अप्रभावना नहीं करना ही प्रभावना है। उन्होंने कहा कि संसार में रहना बुरा नहीं है, संसार को मन में बसा लेना बुरा है।

शेष पेज 03 पर....

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारावैन के साथ
वर्ष 2025 मे 7 देशो की सैर
20 April, 18 May, 1 June, 15 June
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
AUSTRIA, AMSTERDAM
GERMANY, SWITZERLAND
ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
VAYUDOOT
WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

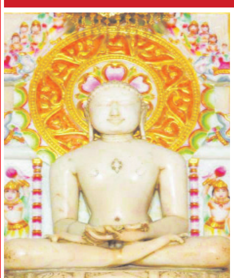
875 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
शांतिधारा : 7:30 AM
संध्या आरती - 7:00 PM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9784857991
हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
अन्य जानकारी हेतु स्थानीय संपर्क सूत्र
मनीष गंगवाल-सह अध्यक्ष
मोबाइल नंबर 95880 20330
इस अतिशय क्षेत्र में किसी भी तरह की बोली, चंदा, डाक या राशि का आग्रह वर्जित है।

JK MASALE
SINCE 1957
Buy online on
jkcart.com
– Breakfast Matlab –
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

ग्यारहवीं पुण्य तिथि 08.03.2025 पर भावपूर्ण हार्दिक श्रद्धांजलि

धर्मनिष्ठ, सरल स्वभावी, व्यवहार कुशल, मुनिभक्त एवं देव शास्त्र गुरु के अनन्य भक्त

हमारे प्रेरणास्त्रोत

जन्म
03.12.1958

स्वर्गवास
08.03.2014

स्व. श्री बृजेश कुमार जी चांदवाड़

आपकी स्मृतियां, आपकी छवि, विस्मृत हो ना पायेंगी। आपका व्यवहार, आपकी बातें सदैव याद आयेंगी।
अर्पित है आपको अश्रुभरी भावांजलि, देते हैं चरणों में आपको हार्दिक श्रद्धांजलि

आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज को भावपूर्ण विनयांजलि अर्पित करते हैं

-: श्रद्धा सुमन अर्पितकर्ता :-

श्रीमती ललिता देवी चांदवाड़ (पत्नी), महेश कुमार-श्रीमती निर्मला देवी, रमेश कुमार-श्रीमती मंजू देवी चांदवाड़ (भाई-भाभी), वरूण-श्रीमती सोनिया चांदवाड़, विनीत-श्रीमती रश्मि चांदवाड़ (पुत्र-पुत्रवधु), वंश, भव्य, भावित एवं रूहिका (पौत्र-पौत्री), श्वेता-मनीष जी जैन (बेटी-दामाद) प्राकुल (दोहिता) एवं समस्त चांदवाड़ परिवार, जयपुर

ससुराल पक्ष - ताराचंद महेन्द्र कुमार बड़जात्या, इटखोरी (झारखंड)

...प्रतिष्ठान: चांदवाड़ फाइनेन्स ब्रोकर, 769, बोरडी का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.)

निवास: ए-86, सिद्धार्थ नगर, टोंक रोड, जयपुर-302017 (राज.) फोन नं. 2320374, 9828021195

श्री नेमिनाथाय: नमः

परम मुनिभक्त, प्रसिद्ध समाजसेवी, समाज गौरव
श्री पदम चन्द जैन बिलाला एवं श्रीमती पुष्पा देवी बिलाला की शादी की 55वीं वैवाहिक वर्षगांठ
09.03. 2025 पर

मंगलमयी हार्दिक शुभकामनाएं

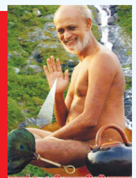

आ. 108 श्री वसुनंदी जी महामुनिराज

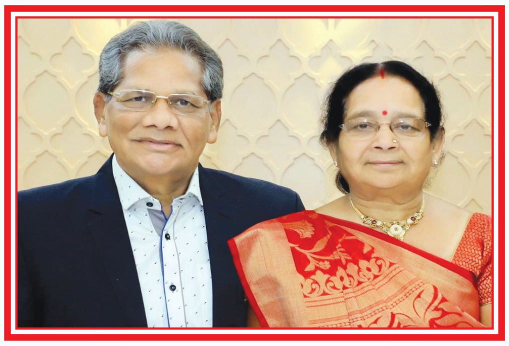

-: शुभाकांक्षी:-

पारस बिलाला (CA) -दीपिका जैन, पहुप बिलाला (ER)-रूचिका जैन
आदिश्री, आदिश, आदित, आदिवा एवं समस्त बिलाला परिवार

-: फर्म :-

जैन पारस बिलाला एण्ड कम्पनी (CA)
कार्यालय: 50 क 2, ज्योति नगर, जयपुर-05ए
शाखाएं - नई दिल्ली, मुम्बई, नोएडा, कोटा, उदयपुर, जोधपुर

निवास: 21, शिवा कॉलोनी, इमली फाटक, जयपुर-15

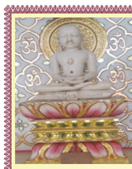

द्वितीय पुण्यतिथि 06.03.2025 पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि

जन्मतिथि
15.07.1944

स्वर्गवास
06.03.2023

देव, शास्त्र, गुरु की परम भक्त, धर्म निष्ठ, सरल स्वभावी, व्यवहार कुशल

स्व. श्रीमती रतन देवी कोठ्यारी

(धर्मपत्नी श्री प्रेमचंद जी कोठ्यारी रेनवाल मांजी वाले जयपुर)

-: श्रृद्धावनत :-

प्रेमचंद कोठ्यारी (पति), महावीर-सुशीला देवी, पारस-आशा देवी, सुरेश-अमिता, महेश-मधु (देवर-देवरानी), राजेश कोठ्यारी-श्रीमती नीलम (पुत्र-पुत्रवधू), विमला देवी छाबड़ा (ननद), कमला देवी-सुरेन्द्र पाटनी (ननद-ननदोई), उषा-राकेश जी वेद महावीर नगर, जयपुर (बेटी दामाद), प्रियांशु-आयुषी (पौत्र-पौत्रवधू), प्रियांशा (पौत्री) सहित समस्त कोठ्यारी परिवार रेनवाल मांजी वाले

सी-2 मधुबन कॉलोनी, जैन मंदिर के पास, टोंक रोड, जयपुर (राज.) मो. 9928491490

शादी की 55वीं वैवाहिक वर्षगांठ 09.03.2025 पर हार्दिक शुभकामनाऐं

आचार्य शिरोमणि 108 विद्यासागर जी महाराज को कासलीवाल परिवार की ओर से भावपूर्ण विनयांजलि

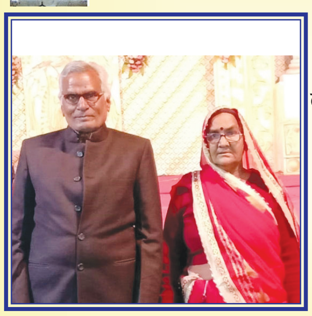

प्रसिद्ध समाजसेवी, दानवीर, परम मुनिभक्त, परम सम्मानीय

श्री पन्नालाल जी जैन एवं श्रीमती आचुदेवी जैन

के वैवाहिक जीवन के सफलतम 55 वर्ष सानंद पूर्ण होने पर बहुत-बहुत बधाई एवं मंगलमयी शुभकामनाऐं।

"हम वीर प्रभु से कामना करते हैं कि आपका दाम्पत्य जीवन सदा सुखी व चिरायु रहे"

-: शुभेच्छु:-

अमित-श्रीमती मीनाक्षी देवी कासलीवाल, आशीष-श्रीमती नेहा कासलीवाल, (पुत्र-पुत्रवधु), आरव, रिशिता (मिल्की), इतिका व मिशिका, काश्वी (पौत्र, पौत्रियां) सहित समस्त कासलीवाल परिवार मालपुरा वाले

आवास: 14 - सुन्दर सदन, श्री बृजलाल नगर, मालपुरा, टोंक (राज.) मो. 9413619752, 9318360710

संकलन - जैन गजट संवाददाता राजाबाबू गोधा, फागी मो. 9460554501

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

स्वस्तिधाम, जहाजपुर में होगा राष्ट्रीय जैन पत्रकार सम्मेलन

जैन पत्रकार महासंघ करेगा तीन पत्रकारों को जैन पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित

उदयभान जैन, राष्ट्रीय महामंत्री, जैन पत्रकार महासंघ

जयपुर, 1 मार्च 2025। भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125 वर्ष पूर्ण होने पर रजत स्थापना वर्ष 2026-27 के क्रम में प्रभावना हेतु जैन पत्रकार महासंघ की सहभागिता से जैन पत्रकार सम्मेलन 22 -23 मार्च 2025 को परम पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी ससंघ के सानिध्य में श्री दिगंबर जैन मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र स्वस्ति धाम जहाजपुर, भीलवाड़ा में आयोजित होगा।

जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने अवगत कराया कि उक्त अधिवेशन में पत्रकारिता क्षेत्र में योगदान देने वाले तीन वरिष्ठ व श्रेष्ठ लेखक, विद्वान, पत्रकारों का सम्मानित किया जाएगा, महासंघ के निर्णय अनुसार निर्णायक मंडल राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेंद्र जैन महावीर सनावद, राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन जयपुर, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री सुनील जैन संचय ललितपुर, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिलीप जैन जयपुर 3 वरिष्ठ व श्रेष्ठ पत्रकारों का चयन करेंगे।

जैन समाज प्रतिवर्ष मनायें प्रथम धर्म तीर्थ प्रवर्तन दिवस-जिनागम पंथ दिवस"

-श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी

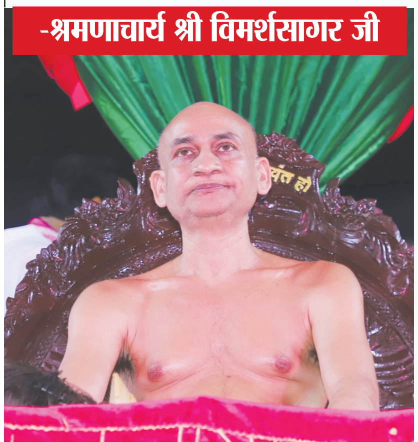

कब हुआ था जैन धर्म का प्रवर्तन ? किसने किया था जिनशासन का प्रवर्तन ? क्या भगवान महावीर स्वामी ने दिया था जैन धर्म को जन्म ? नहीं, नहीं, भगवान महावीर तो इस अवसर्पिणी काल के चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर हुए हैं। वास्तव में यथार्थता की तह तक हम पहुँचते हैं तो ज्ञात होता है, जैन धर्म का कभी जन्म नहीं होता। हाँ, जैन धर्म का जन्म नहीं होता अपितु जैन धर्म का मात्र प्रवर्तन होता है। जी हाँ, इस अवसर्पिणी काल में जम्बूद्वीप के दक्षिण भाग में भरत क्षेत्र में सर्वप्रथम जैन धर्म का प्रवर्तन करने वाले थे इस युग के आदि काल में जन्मे 'अंतिम कुलकर राजाधिराज नाभिराज के पुत्र प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ स्वामी।

"सुनेगा भारत-दिव्यध्वनि" शीर्षक के साथ राजधानी से गूँजी विमर्श वाणी

पंचकल्याणक महोत्सवों से मण्डित प्रथम तीर्थेश ऋषभदेव स्वामी को जब फाल्गुन कृष्ण एकादशी के शुभ दिन 1000 वर्ष की साधना काल के पश्चात् विश्व के चराचर पदार्थों को दर्पणवत् परिपूर्ण झलकाने में समर्थ केवलज्ञान की प्राप्ति हुयी और सौधर्म इन्द्र द्वारा भव्यातिभव्य समवशरण की रचना की गई। आकाश के मध्य भगवान आदिनाथ स्वामी ने समवशरण सभा के मध्य विराजकर जिन धर्म का प्रवर्तन किया। यही दिवस ''प्रथम धर्मतीर्थ प्रवर्तन दिवस'' कहलाया। आज ही के दिन भगवान की वाणी जिनागम के रूप इस धरा पर प्रवर्तित हुयी अर्थात् यही दिवस ''जिनागम पंथ दिवस ''कहलाया। राजधानी दिल्ली में प्रथम बार मनाया गया ''प्रथम धर्मतीर्थ प्रवर्तन दिवस'' - जिनागम पंथ प्रवर्तक भावलिंगी संत संघ शिरोमणि राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज ससंघ (37 पीछी) सानिध्य में यमुना विहार के सुप्रसिद्ध स्पोर्टस् कॉम्प्लेक्स में बहु वृहद रूप में राजधानी में प्रथम बार ''भगवान आदिनाथ यमुना स्वामी का केवलज्ञान महामहोत्सव'' अर्थात ''प्रथम धर्मतीर्थ प्रवर्तन दिवस' अर्थात् 'जिनागम पंथ दिवस'' के रूप में मनाया गया।

शेष पृष्ठ 1 का.....

सरस्वती पुत्र, जिनवाणी के लालों से खूब प्रभावना हो रही है। स्वाध्याय के साथ चारित्र का भी ध्यान रखें। जीवन में परिवर्तन तभी संभव है जब भीतर से अटैचमेंट हो। जब तक विचारों को छानकर नहीं पीयेंगे तब तक मन पवित्र नहीं हो सकता। उतना कमाओ जिससे जीवन आनन्द पूर्वक जी सको। मुनि श्री सहजसागर जी ने अपनी साधना से गौरवान्वित किया है। इस मौके पर मुनि श्री पीयूष सागर जी महाराज एवं मुनि श्री नवपदम सागर जी महाराज ने भी अपने प्रवचनों में आचार्य प्रवर प्रसन्न सागर जी महाराज एवं नगर गौरव मुनि श्री सहज सागर जी महाराज के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डाला।

इस मौके पर आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज की पूजन संगीत के साथ अगाध श्रद्धा के साथ की गई। इस मौके पर आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज की कृति मेरी बिटिया सहित अनेक कृतियों का विमोचन किया।

ज्योति आमगे रही आकर्षक का केंद्रः आयोजन में दुनिया की सबसे छोटी महिला ज्योति आमगे नागपुर की आकर्षण की केंद्र रहीं। 32 वर्षीय ज्योति दुनिया की सबसे छोटी महिला होने का यह अवार्ड गिनीज बुक ऑफ वर्ड रिकार्ड में दर्ज है।

आचार्य श्रीसंघ को साहित्य भेंट - परम पूज्य आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज एवं संघ को विद्वत्रत्न प्रो. अशोक कुमार जैन अभिनन्दन ग्रन्थ, डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती द्वारा लिखित मुक्तक त्रिशतक, आचार्य समन्तभद्र और रत्नकरण्डक श्रावकाचार, अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् पत्रिका-विद्वत् वार्ता प्रदान की गयी। इसी कड़ी में प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी ने मूलाचार भाषा वचनिका, डॉ. सुनील जैन संचय ने अपने द्वारा सम्पादित सुरभितमैत्री तथा शास्त्रि परिषद् बुलेटिन आचार्य श्री को भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कमलेश जैन वाराणसी, डॉ. सौरभ जैन मैनपुरी ने संयुक्त रूप से किया। आयोजन समिति की ओर से उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह मुख्य अतिथि, समागत विद्वानों एवं सभी अतिथियों का भव्य स्वागत किया गया। इस दौरान अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन, गाजियाबाद, पूर्व विधान परिषद एमएलसी श्री पुष्पराज पम्मी, कन्नौज आदि प्रमुखता से उपस्थित रहे। इस मौके पर अनेक गणमान्य अतिथिगण मौजूद रहे। सैकड़ों की संख्या में आयोजन में श्रद्धालु सभागार में कार्यक्रम में शामिल रहे।

प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चारित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्वारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन् वंदन

सन्मतिसुनीलम

हमें उस धन से कोई मतलब नहीं, जो हमारे सुखमय जीवन को दुःखमय बना दे

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

- श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति किशनगढ़ सम्भाग
- राजकुमार बड़जात्या (मरवा वाले)
- मानकचंद गंगवाल (कडेल वाले)
- महावीर महिला मण्डल, किशनगढ़
- श्रीमती सरिता पाटनी, किशनगढ़
- हेमन्द्र कुमार एडवोकेट, बांसवाड़ा
- महावीर प्रसाद अजमेरा जैन गजट वरिष्ठ संवाददाता, जोधपुर
- विमल कुमार बड़जात्या, किशनगढ़ (मरवा वाले)
- कमल कुमार वैद (ज्वैलर्स)
- श्रीमती जया पाटनी पुराना हाउसिंग बोर्ड, किशनगढ़
- कुशल ठोल्या, जयपुर
- श्रीमती ममता सोगानी, जयपुर

विज्ञापन प्रेषकः R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी किशनगढ़ केसरी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर, सह सम्पादक

समाज में एक नया प्रदूषण - प्री वेडींग

पिछले कुछ वर्षों से समाज में विवाह समारोह में एक नया प्रचलन सामने आया है। शादी से पहले लड़का-लड़की किसी हिल स्टेशन, समुद्र के किनारे जाकर गलबहियां डाले वीडियो-फोटो शूट करवा रहे हैं। फिर उसे शादी के दिन रिसेप्शन पार्टी में सार्वजनिक रूप से प्रोजेक्टर पर प्रदर्शित किया जा रहा है। कुछ वीडियो ऐसे है, जिन्हें समाज के लोग देखकर शर्मिन्दगी महसूस करने लगे हैं। जैन समाज में भी यह कुसंस्कृति प्रवेश कर गयी है। प्री वेडींग वास्तव में समाज के अंदर एक नया प्रदूषण है।

समाज के लोगों की चिंता इस बात को लेकर है कि कहीं आने वाले दिनों में अश्लीलता चरम सीमा को न लांघ जाए। किसी रिसेप्शन पार्टी में प्री वेडिंग शूटिंग देखकर समाज के उन युवक-युवतियों का मन भी शूटिंग करवाने के लिए मचलने लगा है, जिनका निकट भविष्य में विवाह होने जा रहा है।

प्री वेडिंग तहत होने वाले दूल्हा - दुल्हन अपने परिवारजनों की सहमति से शादी से पूर्व फोटोग्राफर के एक समूह को अपने साथ में लेकर देश के अलग - अलग सैर सपाटों की जगह, बड़ी होटलों, हेरिटेज बिल्डिंगों, समुद्री बीच आदि जाकर अलग - अलग और कम से कम परिधानों में एक दूसरे की बाहों में समाते हुए वीडियो शूटिंग करवाते हैं और फिर उसी वीडियो फोटोग्राफी को शादी के दिन एक बड़ी सी स्क्रीन लगाकर जहाँ लड़की और लड़के के परिवार से जुड़े तमाम रिश्तेदार मौजूद होते हैं, की उपस्थिति में सार्वजनिक रूप से उस कपल को वह सब करते हुए दिखाया जाता है।

जिनकी अभी शादी भी नहीं हुई है और जिनको जीवन साथी बनने के साक्षी बनाने और उन्हें आशीर्वाद देने के लिये ही सगे संबंधियों और सामाजिक लोगों को वहां बुलाया जाता है, लेकिन यह क्या गेट के अंदर घुसते ही जो देखने को मिलता है वह शर्मसार करने वाला होता है। जिस भावी कपल को हम वहा आशीर्वाद देने पहुँचते हैं, वह कपल वहां पहले से ही एक दूसरे की बाहों में झूल रहे होते हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि यह सब दोनों परिवारों की सहमति से होता है। शादी से पहले ही सार्वजनिक कर देने से शादी की मर्यादा का हनन होता है। दो युवाओं का पवित्र बंधन अंतरंग और निजी संबंध होता है। शादी के पहले इसे सार्वजनिक करने से कभी-कभी अप्रिय स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। शादी से पहले अपनी निजी फोटो को समाज के सामने प्रदर्शित करना गलत है। पति-पत्नी को अपने संबंधों और आपसी प्यार को गुप्त रखना चाहिए। शादी ब्याह में स्टेज पर कुछ ठुमके लगाना, लोग नृत्य के नाम पर कोरियोग्राफर की मदद लेकर अपने घर की इज्जत दांव पर लगाने में फक्र अनुभव कर रहें हैं! महिला संगीत के नाम पर विवाहों में न जाने हमें कहाँ जा रहे हैं, आधुनिकता की होड़ में अपनी सारी मर्यादाएं लांघ रहे हैं।

आखिर हम कहाँ जा रहे हैं, क्यों अपनी सभ्यता और संस्कृति को कलंकित करने पर तुल गए हैं? आखिर इस प्रकार का यह चलन हमें कहाँ ले जाएगा? मेरा समाज के उन सभी सम्भ्रांतजनों से अनुरोध है कि समाज में ऐसी पश्चिमी संस्कृति को बढ़ावा देने वाले परिवारों से ऐसी प्रवृत्ति को बंद करने का अनुरोध करें, नियमावली बनाएं और कठोरता से पालन करें। अन्यथा ऐसी शादियों का सामाजिक रूप से खुलेआम बहिष्कार करें।

अन्यथा ऐसी संस्कृति से आगे चलकर समाज का इतना बड़ा नुकसान होगा जिसकी भरपाई कई पीढ़ियों तक करना संभव नहीं हो सकेगा। अभी अवसर है जागने का वरना फिर पछताने से कुछ नहीं होने वाला।

इस प्रदूषण को समाज से उखाड़ फेंकने के लिए संकल्पित होना होगा।

शुद्ध परिणाम भावपूर्वक की गई प्रभु भक्ति पूजन से कुष्ठ रोग पीड़ा दुख तनाव दूर होता है

-आचार्यश्री वर्धमान सागर जी

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी 52 साधु सहित धरियावद श्री चंद्रप्रभु जिनालय में विराजित हैं। आचार्य श्री के सानिध्य में प्रतिदिन धार्मिक अनुष्ठान पंचामृत अभिषेक पूजन की जा रही है। प्रात:कालीन सभा में आचार्य श्री ने उपदेश में बताया कि जैन धर्म अनादिनिधन धर्म है। संसार में रहने वाला प्राणी धन ऐश्वर्य चाहता है इसके लिए पुरुषार्थ कर धन अर्जित करता है भौतिक अर्जित संपदा से दान देकर पुण्य कमाना चाहिए चक्रवर्ती जो कि 6 खंडों के अधिपति होते हैं, महान पुरुष शलाका पुरुषों ने भी ऐश्वर्या, धन दौलत परिवार राज्य को छोड़कर संन्यास दीक्षा धारण की। आचार्य साधु परमेष्ठि पीड़ा कष्ट रोग दूर करने का उपाय बताते हैं। रत्नत्रय धर्म रूपी औषधि से कुष्ठ रोग सहित, पीड़ा, तनाव कष्ट दूर होते हैं, यह धर्म देशना आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने धर्म सभा में प्रकट की। ब्रह्मचारी वीणा दीदी, गजुभैया, राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री ने उपदेश में आगे बताया कि रोग, पीड़ा होने पर बुद्धि और धैर्य के साथ भाव सहित किए धर्म कार्यों से रोग संकट दूर होते हैं। पंडित विशाल अनुसार आचार्य श्री सहित 52 साधुओं के सानिध्य में 7 मार्च से 14 मार्च तक सिद्धचक्र महामंडल विधान चयनित सौभाग्यशाली परिवारों द्वारा सिद्ध भगवान की पूजन उनके गुणों की आराधना की जावेगी। आचार्य श्री ने उपदेश में आत्महत्या करने, गर्भपात कराने का परिणाम बताया कि इससे अगले जीवन में आयु कम प्राप्त होती है। इसलिए धैर्य और बुद्धि पूर्वक धर्म का आश्रय लेकर दुर्लभ मानव पर्याय जैन कुल में समय का सदुपयोग कर दीक्षा संयम तप से मनुष्य जीवन सार्थक करने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

- राजेश पंचोलिया, इंदौर

मल्लिनाथ भगवान का मोक्ष निर्वाण लड्डू चढ़ाया

महावीर सरावगी, नैनवां

नैनवा जिला-बूंदी 4 मार्च 2025। मंगलवार को आचार्य 108 सुनील सागर महाराज के परम पावन प्रभावक शिष्य क्षुल्लक सुप्रकाश सागर महाराज के सानिध्य में जयपुर रोड पर दिगंबर जैन नेमिनाथ क्षेत्र पर 8:00 बजे नित्य नियम पूजन, अभिषेक, शांति धारा, भगवान मल्लिनाथ का निर्वाण लड्डू चढ़ाने का परम सौभाग्य श्रेष्ठी मोहनलाल कमल कुमार जैन मारवाड़ा प्राप्त किया। 1008 आदिनाथ भगवान की शांति धारा करने का सौभाग्य प्रवीण कुमार प्रेमलता प्रियंक सरावगी ने प्राप्त किया। दिगंबर जैन समाज के प्रवक्ता महावीर सरावगी ने बताया कि इस अवसर पर शैलेश जैन पाटनी बैंक ऑफबड़ोदा प्रबंधक नाथू लाल देईवाले, कैलाश देईवाले, मोहन मारवाड़ा, कमल मारवाड़ा, इंद्र जैन, पवन जैन, महावीर सरावगी, प्रवीण सरावगी, महिलाओं में ममता जैन, रेखा जैन, प्रेमलता जैन, रेनू गुड़ा वाले, अंजू पोदार, सरोज जैन बटावती वाले आदि ने लड्डू चढ़ाने का परम सौभाग्य प्राप्त किया।

निर्माणाधीन श्री दिगम्बर जैन मंदिरजी कोटड़ा अजमेर का चुनाव सम्पन्न

कमल कुमार जैन बाकलीवाल, अजमेर

श्री दिगम्बर जैन समिति (रजि.) पुष्कर रोड, अजमेर के अंतर्गत निर्माणाधीन श्री दिगम्बर जैन मंदिरजी कोटड़ा अजमेर के अर्तगत् दिनांक 27-02-2025 वार गुरुवार को श्री रामदेवजी का मंदिर कोटड़ा रोड, अजमेर पर महिला मंडल गठन हेतु मीटिंग रखी गई थी, उसमें उपस्थित महिलाओं के सानिध्य में सर्व सम्मति से - श्रीमती ज्योति गोधा-अध्यक्ष, श्रीमती नीलू सोनी-मंत्री, सीमा जैन (रिच लुक फैशन)-कोषाध्यक्ष, सुधा गंगवाल-उपाध्यक्ष, प्रचार प्रभार मंत्री उषा बड़जात्या, जैन सांस्कृतिक मंत्री - 1. नमिता सेठी, 2. रीना दोसी, 3. श्वेता जैन, 4. अर्पिता जैन, संगठन मंत्री - 1. मधु काला चुनी गई।

कोटा पटना एक्सप्रेस का स्टॉपेज जैन तीर्थ महावीर जी बनाने की मांग

राघौगढ़, 2 मार्च। कोटा पटना एक्सप्रेस ट्रेन का स्टॉपेज जैन तीर्थ महावीर जी को बनाने की मांग पर मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एवं राज्यसभा सांसद श्री दिग्विजय सिंह ने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को पत्र लिखा था।राज्यसभा सांसद प्रतिनिधि एवं रेल उपभोक्ता सलाहकार समिति मंडल भोपाल के सदस्य विजय कुमार जैन ने जानकारी दी है। जैन समाज की मांग पर श्री दिग्विजय सिंह ने रेल मंत्री को पत्र लिखा था। गत दिवस रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव का पत्र श्री दिग्विजय सिंह को मिला है, जिसमें उन्होंने जानकारी दी है कि इस ट्रेन का स्टॉपेज श्री महावीर जी बनाने आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश संबंधित निदेशालय को दिए हैं। विजय कुमार जैन ने उल्लेख किया है वाराणसी, बक्सर, आरा पटना आदि पूर्वांचल क्षेत्र से श्री महावीर जी की यात्रा करने वाले यात्रियों को इस ट्रेन का स्टॉपेज बनाने की मांग लंबे समय से की जा रही है। आशा व्यक्त की है कि इस ट्रेन का स्टॉपेज जैन तीर्थ श्री महावीर को बनाया जायेगा।

सिद्धचक्र विधान के समापन पर शोभायात्रा

राजेश जैन रागी रत्नेश जैन

बकस्वाहा। तहसील अंतर्गत ग्राम मड़देवरा में श्री चंद्रप्रभु जिनालय में सकल दिगम्बर जैन समाज द्वारा आयोजित श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान विविध कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुआ। धर्म के इस समारोह में मडदेवरा में जैन समुदाय के लोगों ने उत्साह से भाग लिया और ग्राम में धर्ममय वातावरण बना रहा। मडदेवरा में आयोजित इस विधान महोत्सव में प्रतिदिन नित्यमय पूजन, श्रीजी का अभिषेक, शांतिधारा एवं सिद्धचक्र महामण्डल विधान पूजन तथा रात्रि में विविध धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। महोत्सव का समापन श्रीजी की पालकी के साथ ग्राम में शोभायात्रा एवं कलशाभिषेक के साथ किया गया।

समाज से विनम्र निवेदन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की जा रही धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की योजनाओं में दान देकर सहयोग प्रदान कीजिये। संस्था को 12A/80G के तहत आयकर में छूट प्राप्त है। संपर्क मोबाइल/वाट्सअप- 9415008344, 9415108233, 7607921391, 7505102419

SHRI BHATRATVARSHIYA DIGAMBER JAIN MAHASABHA
ACCOUNT No. - 2405000100033312
RTGS/IFSC/NEFT Code - PUNB0185600
PUNJAB NATIONAL BANK, RAJENDRA NAGAR , Lucknow
PIN CODE- 226004 (U P)

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

WITH BEST COMPLIMENTS FROM
Padam Chand Jain (Dhakra)
(Vice President-Shri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha)
Mahendra Kumar Jain (Dhakra)
(Working President- Shri Bharatvarshiya Digamber Jain (Teerth Sanrakshini) Mahasabha T. N. Branch
Pradeep Commercial Interprises
(Iron & Steel Merchants)
56, Sembudoss Street, 2nd Floor, P. B. No 8343, Chennai-600 001
Phone No. 25228522, 25220032 Off. 25206812, 25202601 Resi.
Mobile : P. C. Jain-9444918024 M.k.Jain-9444028522
ASSOCIATE :
Shanti Enterprises
Banglore 080-25266482, Mob. : 09448092260

जयपुर की ओर विहार कर रहे

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन, भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार

'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009

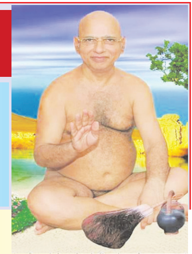

Jain Group

जैन तीर्थक्षेत्र श्री ज्ञान तीर्थ मुरैना की जीवन गाथा

आचार्यश्री ज्ञानसागर ने मुरैना को दी एक अनमोल कृति

लेखक - मनोज जैन नायक, मुरैना

मुरैना (मनोज जैन नायक)। सराकों के राम, सराकों के मसीहा, राष्ट्रसंत, शाकाहार प्रवर्तक, आचार्यश्री शांतिसागर छाणी परम्परा के षष्ट पट्टाचार्य सराकोद्धारक जैन संत आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से संस्कारधानी, धर्म नगरी मुरैना में ए. बी. रोड (धौलपुर आगरा हाइवे) मुरैना में एक अनुपम कृति श्री ज्ञानतीर्थ जैन क्षेत्र का निर्माण हुआ है।

चम्बल की धरा यूं तो खूंखार डकैतों की बजह से काफी बदनाम रही है लेकिन समय सब कुछ बदल देता है। मध्य प्रदेश के चम्बल अंचल में ऐतिहासिक सम्पदा का भंडार है। ककनमठ शिव मंदिर, बटेश्वर, मितावली, जैन मंदिर सिहोनियाँ, जैन मंदिर टिकटोली, करह वाले बाबा का मंदिर, घरोना हनुमान मंदिर, विश्व प्रसिद्ध शनि मंदिर जैसे पुरातत्व की धरोहर के साथ अनेकों सुप्रसिद्ध तीर्थ एवं मन्दिर इस चम्बल को धरती पर विद्यमान हैं। चम्बल के आंचल में नगर मुरैना समाया हुआ है। इसी पावन सरजमीं पर धर्म नगरी मुरैना में ही 01 मई 1957 को श्री शांतिलाल जैन (विचपुरी वाले) के घर माता श्रीमती अशर्फी देवी जैन की कोख से बालक उमेश का जन्म हुआ। बालक उमेश बचपन से ही आध्यात्म में रुचि रखते थे। उन्हें यह सांसारिक सुख घर में बांधकर नहीं रख पाया। बालक उमेश ने मात्र 17 साल की अल्पायु में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर संयम के मार्ग पर चलने का दृढ़ संकल्प लिया और परम पूज्य मासोपवासी आचार्य श्री सुमतिसागर जी महाराज से 05 नवम्बर 1976 में क्षुल्लक दीक्षा एवं 31 मार्च 1988 को श्री सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी में मुनि दीक्षा ग्रहण की और मुनिश्री ज्ञानसागर महाराज के नाम से विश्व में सत्य, अहिंसा, शाकाहार, जीव दया का प्रचार प्रसार कर सम्पूर्ण विश्व में मुरैना का नाम रोशन किया। 30 जनवरी 1989 को सरधना (मेरठ) में आपको उपाध्याय एवं 27 मई 2013 को अतिशय क्षेत्र बड़ागांव (बागपत) में आचार्य एवं छाणी परम्परा के षष्ट पट्टाचार्य पद से सुशोभित किया गया। पूज्य गुरुदेव भगवान महावीर निर्वाण दिवस 15 नवम्बर 2020 को अतिशय क्षेत्र बारां (कोटा) में समाधि को प्राप्त कर मोक्षगामी हो गए।

पूज्य गुरुदेव के अनन्य भक्त अनूप जैन भंडारी मुरैना द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार 26 जनवरी 2003 को दिगम्बर अवस्था में प्रथम बार मुरैना आगमन पर पूज्य गुरुदेव श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने इस तीर्थ की कल्पना की थी। उनकी कल्पना को साकार करने के लिए उनके भक्तों ने सन 2004 में लगभग 14 बीघा जमीन क्रय की। जमीन क्रय करने में श्रावक श्रेष्ठी स्व. श्री प्रेमचंद जी जैन (तेल वाले) मेरठ, श्री योगेश जी जैन (खतौली वाले) दिल्ली, श्री रवि जैन गाजियाबाद, श्री पंकज जैन मेरठ, श्री राकेश जैन ''कैटर्स'' (अम्बाह वाले) दिल्ली, प्रमोद जैन सरधना, विवेक जैन गाजियाबाद की मुख्य भूमिका रही। इस पुनीत कार्य में संपन्न कराने में स्थानीय समाजबंधु अनूप जैन भंडारी, शीलचंद जी बाबूजी, वीरेंद्र जैन (वरहाना वाले) मुरैना ने काफी मशक्कत की।

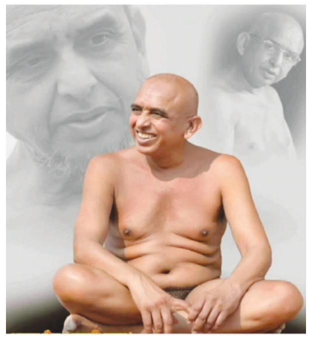

ज्ञानतीर्थ पर जैन मंदिर के निर्माण कार्य का शुभारंभ लगभग 15 वर्ष पूर्व हुआ। मुख्य मंदिर की आधारशिला 10 दिसंबर 2010 को स्व. श्री प्रेमचंद जैन (तेल वाले) मेरठ एवं बोहरे श्री छोटेलाल जी जैन (मिरघान वाले) मंगलम ज्वेलर्स मुरैना के कर कमलों द्वारा रखी गई थी। समस्त गुरुभक्तों द्वारा लगभग 14 बीघा के विशाल प्रांगण में 55 फुट के कैलाश पर्वत की संरचना की गई है। इस पर्वत पर विराजमान की गई प्रतिमा कर्नाटक के विरदी गांव में गोमटेश्वर बाहुबली के भट्टारक श्री चारु कीर्ति जी की देखरेख में निर्माण हुआ था। 7 फुट की वेदिका पर 4 फुट ऊंचे कमल सिंहासन पर साढ़े तेरह फुट ऊंची जैन धर्म के प्रवर्तक, प्रथम तीर्थंकर श्री 1008 भगवान आदिनाथ की पद्मासन प्रतिमा 14 जुलाई 2016 में विराजमान की गई। प्रतिमा के पीछे सुंदर आकर्षक कल्पवृक्ष बनाया गया है। भगवान आदिनाथ की विशाल, भव्य एवं आकर्षक मूर्ति पूज्य गुरुदेव के परम भक्त दिल्ली निवासी श्री वकीलचन्द जैन ने प्रदान की थी। पर्वत के नीचे प्रथम तल पर जिनालय में भगवान आदिनाथ, भगवान मुनिसुव्रतनाथ, भगवान चन्द्रप्रभु, भगवान शांतिनाथ, भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमाएं विराजमान हैं। प्रारम्भिक दौर में ज्ञानतीर्थ के निर्माण में स्व. श्री प्रेमचन्द जैन (तेल वाले) मेरठ, पंकज जैन मेरठ, रवि जैन गाजियाबाद, प्रमोद जैन बलबीर नगर, राकेश जैन (अंबाह वाले) दिल्ली के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। पूज्य गुरुदेव श्री ज्ञानसागर जी की समाधि के पश्चात निर्माण कार्य की गति को विराम सा लग गया था। तब गुरुभक्त सर्वश्री योगेश जैन (खतौली वाले) सूर्यनगर दिल्ली, आनन्द जी (खेकड़ा वाले), सतीश जी (प्रीति होजरी), राकेश जी आजाद नगर, आशीष जैन विकास नगर, विनेन्द्र जैन (जेडी), राजेश जैन (हलुआ वाले), महेशचंद ठेकेदार, ब्रह्मचारिणी बहिन अनिता दीदी, मंजुला दीदी, ललिता दीदी एवं अन्य सभी गुरुभक्तों ने ज्ञानतीर्थ पर गुरुचरण स्थापित कर निर्माण कार्यों को गति प्रदान की। ज्ञानतीर्थ पर आगन्तुक महानुभावों के आवास के लिए एक विशाल एवं भव्य तीन मंजिला अथिति गृह का निर्माण किया गया है। उक्त आवासीय भवन को ज्ञान गेह नाम दिया गया है। जिसमें सर्व सुविधायुक्त 34 कमरे बनाये गए हैं। मुनिराजों, साधु-साध्वियों की आहारचर्या एवं त्यागी व्रतियों के भोजनादि हेतु विशाल एवं भव्य आहार शाला बनाई गई है, जिसे ज्ञान अहारं नाम दिया हुआ है। क्षेत्र पर प्रतिदिन दर्शनार्थ आने वाले बन्धुओं के लिए 5000 वर्गफुट में एक विशाल एवं भव्य भोजनशाला बनाई गई है, जिसमें 200 व्यक्ति एक साथ बैठकर भोजन कर सकते हैं। उक्त भोजनशाला को ज्ञान पोषणम नाम से जाना जाएगा। क्षेत्र पर साधु-संतों के धर्मध्यान एवं विश्राम हेतु सन्त निवास का भी निर्माण हो चुका है। अभी पूज्य गुरुदेव ज्ञानसागर गुरु मन्दिर, श्री चंद्रप्रभु जिनालय, कीर्ति स्तम्भ एवं गौशाला का निर्माण प्रमुख रूप से होना शेष है। खाली जमीन पर भव्य बगीचे का निर्माण भी होगा, जिसमें सभी तरह के पुष्प एवं पौधे लगाएं जायेंगे।

शेष पृष्ठ 7 पर..

राजकीय अतिथि, कवि, हृदय, वात्सल्य मूर्ति, अभीक्ष्ण ज्ञानपयोगी, आचार्य 108 श्री शशांक सागर जी मुनिराज अतिशय क्षेत्र पदमपुरा में विराजमान हैं

शशांक वाणी

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण, बड़े भाग्य से मिल पाता
उन चरणों का स्पर्शन जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन,
ऐसे आचार्य शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत शत नमन

तप और त्याग की भावना करने से
धन अपने आप बढ़ता है

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

1. श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर, जयपुर)
2. पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
3. श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपर)
4. श्रेष्ठी अनूप चंद जैन (भुसावर वाले, जयपुर)
5. श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोलिया (मारूजी का चैक, जयपुर)

1. अरूण कुमार काला अध्यक्ष (कीर्ति नगर जयपुर)
2. अशोक चांदवाड, (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
3.भंवरी देवी काला ध.प. महेन्द्र काला, (स्वर्णपथ मानसरोवर जयपुर)
4. श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
5. प्रेमचन्द सुभाषचन्द लक्ष्मी बगड़ा (नेमीसागर कालोनी, जयपुर)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी,
जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

सेवा धर्म समाज की आगम के अनकूल।
यह पुनीत उद्देश्य है जैन गजट का मूल।।
जैन गज़ट शिकायत 9415008344
जैन गज़ट

समाज सुधार बनाम पीढ़ियों की दूरियां : एक दृष्टिकोण

सम्पादकीय

समाज सुधार बनाम पीढ़ियों की दूरियां: एक दृष्टिकोण एक पाश्चात्य विद्वान दार्शनिक एल्डुमस हक्सले ने कहा है समाज को बदलना व सुधारना चाहता था परन्तु मेरे जीवन का यही सबक है कि केवल व्यक्ति अपने आपको ही सुधार सकता है, दूसरे को नहीं।' आजकल के विषम वातावरण में यह समझा जाना चाहिये कि व्यक्ति या समाज को सुधारने का प्रयत्न कुत्ते की पूंछ को सीधा करने के प्रयास के बराबर है। बहुधा देखा जाता है कि सभा-संस्थाएं अपने अपने सदस्यों के मार्गदर्शन हेतु संदेश एवं आदेश भेजा करती हैं। गीता में श्रीकृष्ण ने तीसरे अध्याय में समाज सुधार हेतु यही संदेश दिया है कि सारा समाज अपने नेताओं व श्रेष्ठ व्यक्तियों के आचरण का अनुपालन करता है।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाण कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।। 21।।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने-अपने स्तर पर अपने आचरण व आचार संहिता को सूक्ष्म रूप से देखें एवं जहां दोष या विकृति लगे उसे दूर करने का भरसक प्रयत्न करें। जहां तक समाज के शीर्षस्थ व मूर्धन्य लोग आज की बदलती हुई परिस्थितियों से वाकिफ नहीं होंगे एवं उनका ध्यान अवांछनीय प्रवृत्तियों की ओर नहीं जायेगा, तब तक न तो उदात्त वृत्तियों को अपने जीवन में उतार सकेंगे और न ही समाज के लिए मार्गदर्शक बन सकेंगे। अतः आज के द्रुतगति से बदलते हुए परिवेश में समाज के नेतृत्व स्थानीय व्यक्तियों को अपने आपको बदलना होगा तभी समाज में सुधार व बदलाव लाया जा सकता है।

भारत में अनादिकाल से यही परंपरा चली आ रही है कि गुरुकुल की शिक्षा एवं परिवार के उच्च मूल्यों से बालक-बालिकाओं को समुचित शिक्षा व मार्गदर्शन मिल जाया करते थे परन्तु अब वे प्रथा-प्रणालियां नहीं रहीं जिसके कारण आज लोग सार्वजनिक मंच पर सिर धुनते हैं कि समाज में सुधार की आवश्यकता है। परन्तु वे कभी भी अपनी कमी न महसूस करते हैं और न स्वीकार। सर्वप्रथम मंच पर बोलने वाला स्वयं अपना सुधार कर समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत करें ताकि उस श्रेष्ठ आचरण का लोग पालन कर सकें।

चाणक्य के बारे में एक किंवदन्ति प्रसिद्ध है कि उसके घर रात के 6 बजे कोई मिलने हेतु गया तो उसने देखा कि चाणक्य एक दीपक बुझा रहा था एवं तत्काल दूसरा जला रहा था। आगंतुक ने कौतूहलवश पूछ लिया तो चाणक्य ने उत्तर दिया 'पहला दीपक सरकारी कामकाज के लिये मुझे राज्य की तरफ से मिला है और दूसरा मेरा निजी है। चूंकि अब मैंने राजकीय कार्य बंद कर दिया है, इसलिये निजी दीपक जलाया है।

इस छोटी सी किंवदन्ति से हम न केवल शासन वर्ग के नियंत्रण हेतु बल्कि आत्म नियंत्रण हेतु कितनी बड़ी शिक्षा ले सकते हैं। भारतीय इतिहास व वांगमय इस प्रकार के प्रसंगों से भरा पड़ा है। अतः हम लोगों का एक मात्र कर्तव्य है कि पहले हम लोग अपने चरित्र एवं आचरण स्वयं सुधारें। उससे आदर्श स्वयं सामने आ जायेगा। चाहे उपनिषदों के नचिकेता का प्रसंग हो अथवा महाराणा प्रताप के घास की रोटी का भारतीय इतिहास के पन्ने ऐसी गौरवमयी गाथाओं से सराबोर हैं।

आज एक ओर प्रमुख समस्या का हमें सामना करना पड़ रहा है जिसके कारण समाज टूटने के कगार पर है- यह समस्या है युवाओं एवं प्रौढ़ों में बढ़ता हुआ वैचारिक असंतुलन। पीढ़ियों में बढ़ती हुई दूरियों के कारण कई प्रकार की सामाजिक समस्याएं विषमताएं उत्पन्न हो रही हैं। यदि यह ऐसे ही प्रबल होती रही तो एक दिन इन सामाजिक समस्याओं के चलते व दोनों पीढ़ी के बढ़ते असुंतलन की खाई से यह समाज टूटकर बिखर जायेगा। समाज मनुष्य की प्रथम आवश्यकता है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और मनुष्यों से ही समाज है अर्थात् यह एक दूसरे के पूरक हैं। अतः समाज के विघटन का प्रभाव देश की प्रगति पर भी पड़ेगा जिससे राष्ट्र सुदृढ़ नहीं हो पायेगा। परिवार से समाज, समाज से राज्य व राज्य से एक राष्ट्र बना हुआ है। अगर राष्ट्र को सदृढ़ बनाना है तो परिवार को सुदृढ़ बनाना होगा। उसके विघटन को रोकना होगा और यह तभी संभव होगा जब दोनों पीढ़ियों में आपसी सामंजस्य अच्छा होगा, दोनों एक दूसरे के परिपूरक बनकर आपसी तालमेल से कार्य करेंगे।

आज इसके बिलकुल विपरीत हो रहा है। आज दोनों पीढ़ियों में वैचारिक तालमेल में कमी आती जा रही है और दोनों के बीच दूरियां बढ़ती जा रही हैं। इसके लिए दोनों ही जिम्मेदार हैं। जहां पुरानी पीढ़ी अपनी सोच व मानसिकता को बदलने के लिए तैयार नहीं हैं, वहीं नई पीढ़ी उनकी मानसिकता व सोच को अपनाने को तैयार नहीं है, अतः समय के अनुसार पुरानी पीढ़ी को अपनी सोच व मानसिकता में बदलाव लाना होगा और नई पीढ़ी को उनकी सोच व मानसिकता को समझना होगा।

यदि तर्क के साथ व अपनी सोच में लचीलापन लाकर पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को कोई बात समझाती है या अपनी परम्पराओं के बारे में बताती है तो कोई कारण नहीं रह जाता कि नई पीढ़ी उसको न समझे या न माने क्योंकि हमारे पूर्वजों ने जो नियम व परम्परायें बनाई थीं उन्हें समय की मांग व तर्क के साथ बनाई थीं।

हर नियम व परम्परा के पीछे ठोस कारण अवश्य था, है और रहेगा जिसे आज की पीढ़ी को समझना अति आवश्यक है। यदि इस तरीके को अपनाया जाये तो दोनों पीढ़ियों में निकटता आ जायेगी। इसके साथ-साथ पुरानी पीढ़ी को नई पीढ़ी की बात को सुनना व समझना भी होगा। यह प्रसिद्ध है कि एक उम्र के बाद मां बेटी के बीच सहेली का व बाप बेटे के बीच दोस्त का रिश्ता बन जाता है। कहावत भी है 'बाप का जूता बेटे के पांव में आने लगे तो दोनों दोस्त बन जाते हैं।' केवल बच्चों को दोष देना कि आजकल के बच्चे सुनते नहीं हैं हमारे जमाने में ये होता था, वह होता था, समस्या का निदान नहीं है। कहा भी जाता है कि जिन्दगी सीखते रहने के लिये है। मनुष्य जिन्दगी भर कुछ न कुछ, किसी न किसी से, किसी न किसी रूप में सीखता ही रहता है। कई बार छोटों से भी बड़े नई चीज सीखते हैं अतः बड़ों को कभी यह नहीं सोचना चाहिये कि छोटे कभी भी सही बात नहीं बोल सकते या नहीं कर सकते। अगर बड़ों को लगता है कि छोटे सही कह रहे हैं या कर रहे हैं तो उनको भी उसे अपना लेना चाहिये। पर इसका मतलब यह कतई नहीं है कि छोटों को बड़े की अवज्ञा करनी चाहिए या परम्पराओं को तोड़ना चाहिए या बड़ों को ही हमेशा छोटों की बातें सुननी या माननी चाहिये। यह पहल तो दोनों ही तरफ से होनी चाहिए। दोनों ही जब एक दूसरे की बात को समझेंगे, जानेंगे, मानेंगे तभी दोनों एक दूसरे के पूरक बन पायेंगे व दोनों पीढ़ियों का अन्तराल समाप्त होगा। आइये देखें कि दोनों पीढ़ियों में बढ़ते हुए असंतुलन से आज हमारे समाज की क्या स्थिति हो गई है। सामाजिक कार्यक्रमों में, विवाह-शादियों में दिखावा, प्रदर्शन, आडम्बर इतना बढ़ता जा रहा है कि वह कब, कैसे रुकेगा समझ के बाहर हो रहा है। पारिवारिक आयोजनों में आत्मीयता का लवलेश भी नहीं है। घर-परिवार टूट रहे हैं। स्वतंत्र एकल परिवार में वृद्धि से बुजुर्गों की अवहेलना होने लगी है। अंतर्जातीय, प्रेमविवाह के नाम पर अधिकांशतः मोहपाश के जाल में फंसकर बेमेल विवाह हो रहे हैं। जातीय बंधुओं के प्रति सहायता की भावना अब स्पर्धा में बदल रही है। येनकेन प्रकारेण अर्थोपार्जन का महत्व बढ़ जाने से नैतिक आचरण का पतन हो रहा है। मान, प्रतिष्ठा, शोहरत और अपार धन पाने की लालसा बढ़ते जाने से काबिल, अनुभवी, योग्य और समर्पित कार्यकर्ताओं की अवहेलना होने लगी है। सामाजिक क्रांतियों के लिये प्रेरित करने वाला माध्यम आज नहीं रहा।

इसी दुविधापूर्ण स्थिति में समाज में निराशाजनक भावना पनपने लगी है, क्योंकि शीर्ष नेतृत्व जो कहते हैं और करते हैं उनमें कोई मेल नहीं। नियम, आचार संहिता, कार्यक्रम हम बनायेंगे, अमल आप करो, ऐसी व्यवस्था कायम हो गई है। इसी के फलस्वरूप सभा सम्मेलनों में चिंतन-मंथन के नाम पर समाज सुधार बनाम आचार-संहिता की गप्पें हो जाती हैं, ताकि कुछ बोलने वालों के मन की भड़ास शांत हो सके। अंतिम परिणाम शून्य ही मिलता है।

– कपूरचन्द जैन पाटनी
प्रधान सम्पादक

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

जैन धर्म में होली का महत्व और इसे मनाने की सही विधि

भारत में होली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि संस्कृति और सामाजिक मेलजोल का प्रतीक बन चुकी है। यह त्योहार रंगों, उल्लास और आपसी प्रेम को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है लेकिन समय के साथ इसके स्वरूप में कई विकृतियाँ आ गई हैं। जैन समाज, जो अहिंसा और संयम का संदेश देता है, क्या वास्तव में इस पर्व को जैन सिद्धांतों के अनुरूप मना रहा है? वर्तमान समय में होली के नाम पर नशाखोरी, भांग, शराब और उच्छृंखलता जैसी कुरीतियाँ समाज में बढ़ती जा रही हैं। विशेष रूप से मारवाड़ी और जैन समाज, जो मूल रूप से व्यापारिक समुदाय के रूप में जाने जाते हैं, उनमें भी यह प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इस लेख में हम जैन धर्म के दृष्टिकोण से होली के महत्व, इसे मनाने के सही तरीकों और वर्तमान समय में होली के स्वरूप पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

1. जैन धर्म में त्योहारों की मूल भावना: जैन धर्म में किसी भी पर्व का उद्देश्य केवल बाहरी आनंद और उत्सव नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक उन्नति है। पर्वों को मनाने की प्रक्रिया संयम, तप, त्याग और अहिंसा पर आधारित होती है।

भगवान महावीर ने कहा है: ''जो व्यक्ति अपनी आत्मा को नियंत्रित नहीं कर सकता, वह सच्चा आनंद प्राप्त नहीं कर सकता।''

त्योहारों का मतलब भौतिक भोग-विलास नहीं, बल्कि आत्मिक उत्थान होना चाहिए। लेकिन आज जैन समाज जिस तरह से होली मना रहा है, वह इन मूल सिद्धांतों से बहुत दूर जा चुका है।

2. होली का ऐतिहासिक और धार्मिक संदर्भः होली का संबंध मुख्यतः वैदिक परंपरा से जुड़ा है, जिसमें हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद की कथा प्रमुख है। यह बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक माना जाता है। जैन ग्रंथों में इस पर्व का विशेष उल्लेख नहीं मिलता, लेकिन कुछ जैनाचार्यों ने इसे संयम और सदुणों की वृद्धि के रूप में देखने की सलाह दी है। होली का पारंपरिक उद्देश्य प्रेम, सौहार्द और उत्साह को बढ़ावा देना था, लेकिन आज यह केवल बाहरी रंगों, शराब, भांग, और शोर-शराबे तक सीमित रह गई है।

3. जैन और मारवाड़ी समाज में होली के विकृत स्वरूप: (क) जैन समाज में बढ़ती होली की प्रवृत्तिः यदि वर्तमान समय की बात करें तो जैन समाज, जो मूल रूप से संयम और साधना का अनुसरण करने वाला समुदाय है, अब होली के नाम पर सबसे अधिक रंग खेलने और भोग-विलास में लिप्त दिखाई देने लगा है। आज अधिकांश जैन परिवार होली के नाम पर बड़े पैमाने पर आयोजन करते हैं, जहां -

रंगों की बौछार होती है, संगीत और डीजे पर नाच-गाना होता है, शराब और भांग जैसी नशीली वस्तुओं का सेवन किया जाता है, जबकि जैन धर्म में किसी भी प्रकार के नशे का स्पष्ट निषेध है।

भगवान महावीर ने कहा है: ''जो व्यक्ति नशे में डूबा है, वह अपनी आत्मा के अस्तित्व को भूल जाता है।'' फिर भी, होली के दिन जैन युवक-युवतियाँ बड़े स्तर पर नशे में लिप्त दिखाई देते हैं।

(ख) मारवाड़ी समाज में भांग और शराब का बढ़ता प्रचलनः मारवाड़ी समाज जो परंपरागत रूप से व्यापारिक और

धार्मिक प्रवृत्ति का रहा है, अब होली के दौरान नशाखोरी में अग्रणी बनता जा रहा है। भांग का सेवन एक 'परंपरा' के रूप में देखा जाता है। शराब के बड़े-बड़े आयोजन होते हैं। होली की आड़ में अमर्यादित व्यवहार किया जाता है। क्या यह वही समाज है जिसने कभी संयम, व्यापारिक नैतिकता और धार्मिकता को अपनाया था? क्या यह जैन और मारवाड़ी मूल्यों के अनुरूप है?

जैन ग्रंथों में स्पष्ट उल्लेख है: ''जो इंद्रियों के वश में है, वह मोह में बंधा हुआ है। जो संयम में है, वही मुक्त है।'' लेकिन आज होली का मतलब शराब, भांग और मस्ती तक सीमित रह गया है।

4. जैन धर्म के अनुसार होली कैसे मनाएं?

-(क) आत्मशुद्धि की होलीः होली के दिन केवल बाहरी रंगों से नहीं, बल्कि अपने भीतर के विकारों को जलाने की होली मनाएँ। अपने क्रोध, लोभ, अहंकार और ईर्ष्या को खत्म करने का संकल्प लें।

भगवान महावीर कहते हैं: ''स्वयं को पहचानो, यही सबसे बड़ा उत्सव है।''

(ख) रंगों के बजाय अध्यात्म के रंग में रंगेंः यदि रंग खेलना है, तो उसे प्राकृतिक रूप से, मर्यादित तरीके से करें। लेकिन अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हम अपने जीवन में सच्चाई, दया और परोपकार के रंग भरें।

जैन मुनि आचार्य विद्यासागर जी महाराज कहते हैं: ''रंग से नहीं, संस्कारों से रंगो, यही सच्ची होली होगी।''

(ग) नशे से बचें और दूसरों को बचाएंः कोई भी त्योहार आत्मविनाश का साधन नहीं होना चाहिए। यदि आपके समाज में होली के दिन भांग और शराब का सेवन हो रहा है, तो इसका विरोध करें। अपने परिवार के बच्चों को नशे से बचाएं। संयम और मर्यादा बनाए रखें।

(घ) दान और परोपकार की होली मनाएँ: इस दिन गरीबों को भोजन, वस्त्र और अन्य आवश्यक सामग्री दान करें। यह सबसे पवित्र और पुण्यकारी कार्य होगा।

जैन धर्म कहता है: ''दान से बड़ा कोई पुण्य नहीं।''

5. निष्कर्षः जैन और मारवाड़ी समाज को अपनी होली सुधारने की आवश्यकताः आज जैन और मारवाड़ी समाज जिस प्रकार होली मना रहे हैं, वह न केवल धार्मिक दृष्टि से गलत है, बल्कि सामाजिक और नैतिक रूप से भी चिंताजनक है।

- नशा, भांग और शराब का सेवन केवल पतन की ओर ले जाता है।
- रंग खेलने के नाम पर जल और पर्यावरण की बर्बादी हो रही है।
- असंयम और उच्छृंखलता से समाज का नैतिक पतन हो रहा है।

यदि हम सच में अपने धर्म और संस्कृति के प्रति जागरूक हैं, तो हमें अपनी होली की परंपराओं को सही दिशा में मोड़ना होगा।

- आत्मशुद्धि, संयम और सदुणों की होली मनाएं।
- दान और परोपकार को अपनाएं।
- शराब और भांग जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रहें।
- अपने परिवार को जैन सिद्धांतों के अनुसार त्योहार मनाने की प्रेरणा दें।

अंतिम संदेशः ''सच्ची होली वह नहीं जो रंगों से खेली जाए, बल्कि वह है जो आत्मा को निर्मल बना दे।''

इसलिए, आइए इस बार हम होली को बाहरी दिखावे से मुक्त कर आत्मिक शुद्धि और धर्म की होली मनाएं।

चार करने वाली पुस्तक के लिए रूपये 2 लाख का पुरस्कार

आचार्यश्री ज्ञानसागर ने मुरैना को दी एक अनमोल कृति

भगवान महावीर फाउंडेशन द्वारा 15.02.2025 को डॉ. नेमीचंद जैन मेमोरियल अवार्ड विजेता की घोषणा की गई। प्रोफेसर भागचंद्र जैन ''भास्कर'' द्वारा लिखित ''जैन सांस्कृतिक चेतना के स्वर'' को चौथे डॉ. नेमीचंद जैन मेमोरियल पुरस्कार के लिए पुरस्कार विजेता के रूप में चुना गया है। पुरस्कार में 2 लाख रुपये की नकद राशि, एक स्मृति चिन्ह और एक प्रशस्ति पत्र शामिल है। पुरस्कार विजेता को जल्द ही आयोजित एक औपचारिक समारोह में पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार हिंदी या अंग्रेजी में लिखी गई उत्कृष्ट, प्रकाशित और अप्रकाशित पुस्तकों को मान्यता देता है जो भगवान महावीर की शिक्षाओं को बढ़ावा देती हैं। फाउंडेशन द्वारा इस वर्ष के नेमीचंद पुरस्कार के लिए 31 पुस्तकों (8 अंग्रेजी और 23 हिंदी) पर विचार किया गया। मद्रास विश्वविद्यालय के जैनोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. प्रियदर्शना जैन और शासुन जैन कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. ज्ञान जैन के नेतृत्व में मूल्यांकनकर्ताओं की एक टीम के अनुसार यह पुस्तक ऐतिहासिकता, कला, संस्कृति, परंपरा और जैन धर्म के विभिन्न पहलुओं का एक व्यापक संकलन प्रस्तुत करती है। भगवान महावीर फाउंडेशन के संस्थापक श्री एन. सुगलचंद जैन, ट्रस्टी श्री विनोद कुमार और सलाहकार श्री के. नंद किशोर, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त), फाउंडेशन के बारे में अधिक जानने के लिए www.bmfawards.org पर जाएं।

शेष पृष्ठ 5 का....

परम्परा के षष्ट पट्टाचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से सप्तम पट्टाचार्य श्री ज्ञेयसागर जी महाराज ससंघ के सानिध्य एवं स्वस्तिधाम प्रणेत्री गुरुमां गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ के मुख्य निर्देशन में ज्ञानतीर्थ जैन मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा हेतु 01 फरवरी से 06 फरवरी 2023 तक श्री जिनविम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य जयकुमार निशांत जी के आचार्यत्व में विशाल एवं भव्य आयोजन सानन्द हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न हुआ। इस आयोजन में पट्टाचार्य श्री विनीतसागर जी महाराज, गणिनी आर्यिका सर्वश्री लक्ष्मीभूषण माताजी, श्री सृष्टिभूषण माताजी, श्री आर्षमति माताजी सहित लगभग 50 साधू-संत सम्मिलित हुए। उक्त महोत्सव में देशभर से 50,000 से अधिक साधर्मी बन्धुओं ने सम्मिलित होकर गुरुभक्ति का परिचय दिया। ज्ञानतीर्थ के विकास में दिल्ली, गाजियाबाद, मेरठ, खतौली, बड़ौत, खेकड़ा, दिल्ली एनसीआर सहित सम्पूर्ण भारतवर्ष के गुरु भक्तों का योगदान रहा है। पूज्य गुरुदेव श्री ज्ञानसागर जी महाराज के स्वप्नों को साकार करने का संकल्प ज्ञानसागर भक्त परिवार ने लिया है। इसी तारतम्य में पूज्य आचार्य श्री ज्ञेयसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य एवं गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माताजी के निर्देशन में प्रतिष्ठाचार्य जयकुमार जी निशांत के आचार्यत्व में 21 फरवरी को ज्ञान गुरु मंदिर एवं श्री चंद्रप्रभु जिनालय की आधारशिला रखी गई और 06 मार्च 2025 को नवीन जिनालय की आधारशिला श्रीमती चंद्रकांता जैन, बृजेश जैन, राजेश जैन, यतीश जैन, मनोज जैन, पंकज जैन मेडिकल परिवार मुरैना एवं गुरु मंदिर की आधारशिला खैकड़ा वाले श्री आनन्द जैन, राहुल जैन, रजत जैन सूर्यनगर गाजियाबाद के कर कमलों द्वारा रखी जा रही है।

ज्ञानतीर्थ की गाथा लिखते समय परम गुरुभक्त लाला गुलशनराय अनिल जैन (हलुआ वाले), राकेशकुमार मुकेश जैन (तेल वाले) मेरठ, पवन जैन (बसेड़ा वाले), इंद्रसेन जैन दिल्ली, मुकेश जैन बिटूमैंन आगरा, रूपेश जैन (चांदी वाले) आगरा, हंस जी जैन मेरठ, मनोज जैन दिल्ली, नरेशभूषण जैन, अनिल शाह ग्वालियर, जिनेश जैन अम्बाह, शांतिलाल जी (बिचपुरी वाले), भागचंद भंडारी एवं मनोज जैन बरेह मुरैना को नजरअंदाज करना नाइंसाफी होगी।

ज्ञानतीर्थ की पावन धरा पर अभी तक आचार्यश्री विराग सागर जी, आचार्यश्री बर्धमान सागर जी, मुनिपुंगव सुधासागर जी, आचार्य श्री सुंदर सागर जी, आचार्यश्री विनीतसागर जी, आचार्य श्री वसुनंदी जी, आचार्य श्री विनिश्चश्चय सागर जी, आचार्यश्री विमर्श सागर जी, आचार्यश्री बिहर्षसागर की, आचार्यश्री निर्भय सागर जी, आचार्यश्री विनम्र सागर जी, मुनिश्री प्रणम्यसागर जी, गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी, लक्ष्मीभूषण माताजी, सृष्टिभूषण माताजी, आर्षमति माताजी, पूर्णमति माताजी सहित सैकड़ों दिगम्बराचार्यों, आर्यिका माताजियों एवं साधु साध्वियों का पदार्पण हो चुका है।

जैन गजट द्वारा चर्याशिरोमणी आचार्यश्री विशुद्ध सागर जी विशेषांक का प्रकाशन

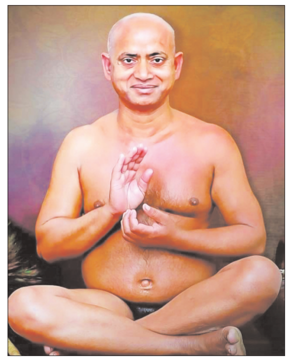

पूज्य मुनि श्री सुप्रभ सागरजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक जैन गजट का समाधिस्थ पूज्य आचार्यश्री विराग सागर जी महाराज संघ के नये पट्टाचार्य चर्या शिरोमणि परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज विशेषांक का प्रकाशन सुमति धाम, गोधा एस्टेट इन्दौर मध्य प्रदेश में 27 अप्रैल से 2 मई 2025 तक होने जा रहे पट्टाचार्य पदारोहण महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित होने जा रहा है जिसका विमोचन इन्दौर में होने जा रहे पट्टाचार्य पदारोहण महोत्सव के अवसर पर किया जायेगा। इस महोत्सव से पूरे देश भर से समस्त परम्पराओं के महान संतों के बड़ी संख्या में पधारने की संभावना है। यह विशेषांक सौभाग्यशाली पुण्यार्जकों के सहयोग से होगा जिसकी एक पृष्ठ की पुण्यार्जक सहयोग राशि आमंत्रित शुल्क 20,000/- के स्थान पर मात्र 10,000/- रूपये है। जिसमें आपका फोटो एवं नाम, पता चर्या शिरोमणी आचार्यश्री संबंधी लेख वाले पृष्ठ के नीचे सौजन्य के रूप में प्रकाशित किया जायेगा जिसके लिये आपका सहयोग सादर आमंत्रित है।

यह सहयोग राशि मात्र इसी विशेषांक के लिये निर्धारित की गई है।

इस विशेषांक में जैन गजट की पूर्व निर्धारित विज्ञापन दरों यथा फुल पेज 20,000/-, आधा पेज 12000/, चौथाई 6000/-, के एवं छोटे विज्ञापन 2100/-, 1500/- के विज्ञापन भी सादर आंमत्रित हैं।

समाज के श्रेष्ठी दानवीर महानुभावों से निवेदन है कि इसके लिये पुण्यार्जन राशि, सहयोग राशि एवं विज्ञापन भेजकर सहयोग प्रदान करें।

परम पूज्य आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताओं से निवेदन है कि इसके लिए अपने संस्मरण, लेख, कवितायें एवं आचार्य श्री एवं संघ से संबंधित फोटो आदि निम्नलिखित वाट्सएप नं. या ईमेल पर या कोरियर से भेजकर सहयोग प्रदान करें। सम्पर्क -जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ-226004 उ. प्र. 9415108233, 9415008344, 7505102419, 7607921391

श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः

लोगुज्जोयरा धम्म तित्थयरे जिणवरेय अरहंते।
कित्तण केवलिमवे य उत्तमबोहि मम दिसंतु॥

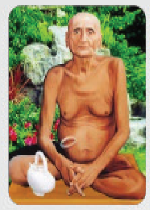

चरित्र चक्रवर्ती
आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

स्मृति दिवस श्री निर्मलकुमार जैन सेठी

जैन धरोहर दिवस

स्व. निर्मल कुमार जैन सेठी
(8 जुलाई, 1938 – 27 अप्रैल, 2021)

मान्यवर
सादर जयजिनेन्द्र,

श्रावकरत्न, कर्मयोगी, देव, शास्त्र और गुरु के अनन्य उपासक, प्राचीन तीर्थ जीर्णोद्धारक श्री निर्मलकुमार जी जैन सेठी की 27 अप्रैल 2025 को चतुर्थ पुण्यतिथि के अवसर पर सेठी ट्रस्ट और श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की ओर 26 अप्रैल 2025 दिन शनिवार को पूना और 27 अप्रैल 2025 दिन रविवार को महाराष्ट्र की राजधानी मुम्बई में उनके कार्यों के पुण्यस्मरण एवं विनयांजलि हेतु समारोह का आयोजन किया जा रहा है। उक्त पावन दिवस पर **'दर्शन एवं साहित्य'** तथा **'कला एवं पुरातत्व'** के क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान करने वाले दो विद्वानों को **'श्री निर्मलकुमार सेठी जी मेमोरियल पुरस्कार'** से सम्मानित किया जाएगा। आप सभी से सादर अनुरोध है कि इस पुण्यतिथि के अवसर पर उन्हें विनयांजलि देने हेतु सपरिवार पधारकर हमें कृतार्थ करें।

कार्यक्रम

प्रथम दिवस

जैन धरोहर दिवस

दिनांक : 26 अप्रैल 2025 शनिवार

समय

प्रातः 9:00 बजे से दोपहर 5:00 तक

स्थान

अभय प्रभावना केन्द्र, पूना

द्वितीय दिवस

जैन धरोहर दिवस

दिनांक : 27 अप्रैल 2025 रविवार

समय

दोपहरः 1:00 बजे से शाम 5:00 तक

स्थान

मुकेश पटेल सभागार, विले पार्ले, मुम्बई

आयोजक
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर
जैन महासभा
नई दिल्ली

विनीत
सेठी ट्रस्ट
नई दिल्ली । गुवाहाटी । सिलचर

संयोजक
श्री दिगम्बर जैन समाज
मुम्बई

नोटः समस्त जैन समाज से निवेदन है कि इस दिन आप भी जगह-जगह स्थानों पर जैन धरोहर दिवस अवश्य मनायें

तीन दिवसीय श्री श्री 1008 त्रिकाल चौबीस तीर्थंकर समवशरण महाअर्चना विधान का होगा भव्य आयोजन

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

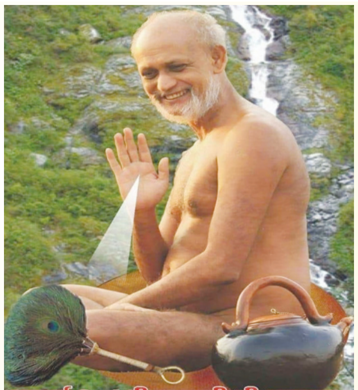
आचार्य १०८ श्री वसुनन्दी जी महाराज

बाड़ा पदमपुरा की पावन धरा पर आचार्य वसुनन्दी जी महा मुनिराज (31 पिच्छिका चतुर्विध) ससंघ के पावन सानिध्य 28 मार्च से 30 मार्च तक तीन दिवसीय श्री श्री 1008 त्रिकाल चौबीस तीर्थंकर समवशरण महा अर्चना विधान का ऐतिहासिक कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में संयोजक पदम बिलाला ने बताया कि तीन परमेष्ठियों का सानिध्य रचने जा रहे हैं एक इतिहास, आप भी बनकर एक पात्र इतिहास के बनें प्रत्यक्ष साक्ष्य, समवशरण, आरक्षण प्रारम्भ पहले आओ - पहले पाओ। ऐतिहासिक सर्वोत्कृष्ट सुअवसर का लाभ प्राप्त कर पुण्यार्जन अर्पित करें - धर्म जागृति संस्थान, राजस्थान प्रबंध समिति, क्षेत्र बाड़ा पदमपुरा

कर्मठ समाजसेवी व परम मुनिभक्त समाज गौरव श्री पदम चन्द जैन बिलाला

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जनक पूरी-ज्योति नगर जयपुर। जैन समाज के अध्यक्ष देव, शास्त्र, गुरु के परम भक्त, सरल स्वभावी, मृदुभाषी व धर्म परायण समाज श्रेष्ठी हैं श्री पदम जैन बिलाला। समाज की बहुत सी संस्थाओं से जुड़कर समाजसेवा व धर्म प्रभावना का कार्य कर रहे हैं। आपको हाल ही में वर्ष 2024 में फिरोजाबाद में समाजसेवा के लिए चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांति सागर राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा 'समाज गौरव' मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। श्री पदम जैन बिलाला सुपुत्र स्व. श्री धन्ना लाल जी बिलाला का जन्म 30.06.1952 कार्तिक की पूर्णिमा को सांगा का बास (किशनगढ़ - रेनवाल) के धर्म परायण परिवार में हुआ था। आपकी प्रारंभिक पढ़ाई किशनगढ़ रेनवाल एवं कालाडेरा व जयपुर में हुई थी। आप MA, BCom, CAIIB, CeBA की शैक्षणिक योग्यता प्राप्त 37 वर्ष की उत्कर्ष बैंक सेवा से वरिष्ठ अधिकारी के रूप में जून 2012 में सेवानिवृत हुए थे।

आपका प्रारम्भ में कुचामन सिटी समाज सेवा का प्रमुख कार्य क्षेत्र रहा जहाँ श्री जैन वीर मंडल के दस वर्षों तक महामंत्री रहे तथा लायंस क्लब में जोन चेयरमेन के पद भार तक रहकर अच्छी सेवाएं प्रदान की है। सेवा काल में विभिन्न बैंकों की यूनियनों में भी विभिन्न पदों पर रहते हुए सेवा कार्य किया। आप वर्तमान में जनकपुरी - ज्योति नगर जयपुर जैन मन्दिर के अध्यक्ष, सांगा का बास (जिला - जयपुर) जैन मन्दिर के अध्यक्ष, साधु सन्तों की सेवा भावी संस्था अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान के राजस्थान प्रांत के अध्यक्ष (संस्था को लगातार पिछले दो वर्ष से उत्कृष्ट सेवा कार्य के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो रहा है) टोंक रोड के 19 मंदिरों की सामाजिक सेवा संस्था श्री दिगम्बर जैन समाज समिति के मुख्य संयोजक (अध्यक्ष), समाज में बैंकिंग सहायता की संस्था अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री तथा स्थानीय कार्याध्यक्ष, जैन पाठशाला, दिगम्बर जैन मन्दिर महासंघ के संयुक्त मन्त्री, दिगंबर जैन संस्कृत शिक्षा समिति जयपुर के महासमिति सदस्य एवं छात्रावास के संयोजक, राजस्थान जैन साहित्य परिषद के कार्य समिति सदस्य, भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान के कार्यसमिति सदस्य, किशनगढ़ रेनवाल प्रवासी मंडल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, रिटायर्ड बैंक अधिकारी संघ के क्षेत्रीय सचिव, ताई जी चेरिटेबुल (साहित्य प्रकाशन) ट्रस्ट के मुख्य ट्रस्टी, जे पी बी सोश्यल फाउंडेशन (जरूरत मन्द की सहायता) के निदेशक राज. जैन सभा, महावीर शिक्षा समिति, पक्षी चिकित्सालय, णमोकार मंडल सहित विभिन्न संस्थाओं के आजीवन सदस्य के रूप में जुड़े हुए होते हुए भी धर्म प्रभावना के साथ डायग्नोस्टिक सेंटर के माध्यम से गरीब व जरूरतमंद बीमार मरीजों की सेवा का कार्य कर प्रसन्नता अनुभव करते हैं।

आपके परिवार में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा देवी जैन - महिला मंडल, संगिनी फॉरएवर, महिला जागृति संगठन सहित कई धार्मिक संस्थाओं में पदाधिकारी है तथा साधु चर्या एवं आहार व्यवस्था में रुचि रखती है। पुत्र - पारस बिलाला - देश के प्रमुख सनदी लेखाकारों (FCAB) में एक -फर्म जैन पारस बिलाला एंड कं. जयपुर (देश में पन्द्रह से अधिक शहरों में शाखायें) पुत्र - पहुप बिलाला - वरिष्ठ सॉफ्टवेयर इंजीनियर - अमेजोन में कार्यरत - नोएडा प्रवास पुत्र वधु -दीपिका जैन Com, MA, MBA, PGDCA (द्रव्य संग्रह ग्रन्थ में रत्नाकर एवार्ड) ग्रहणी पुत्र वधू - रुचिका जैन - Bcom, MBA, B Ed (diploma in digital marketing) ग्रहणी पौत्र / पौत्रियां - आदिश्री, आदिश, आदित, आदिवा - सभी अध्ययनरत हैं, आपका निवास शिवा कॉलोनी, इमली फाटक, जयपुर में स्थित है।

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी से नगर के व्यवसाई श्री भंवरलाल सरिया ने दीक्षा हेतु किया निवेदन

राजेश पंचोलिया, इंदौर

पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधी आचार्य श्री वर्धमान सागर जी धरियावद विराजित हैं नगर के व्यवसायी श्री भंवर लाल सरिया ने दीक्षा हेतु आचार्य श्री को निवेदन किया आपके पिता ने भी सन 1979 में दीक्षा लेकर मुनि श्री उदय सागर जी बने थे। आपकी समाधि 1980 में हुई। आचार्य श्री ने पूजन के दौरान चढ़ाए जाने वाले द्रव्य किस आशय से चढ़ाए जाते हैं उन गुणों बाबत् सरल भाषा में बताया जो सिद्ध भगवान का गुणानुवाद किया जाता है, उनकी प्रशंसा की जाती है उसकी विवेचना करते हुए बताया कि जो संसार के बंधनों से छूट गए हैं जिनमें अनंत दर्शन, अनंत ज्ञान, अनंत सुख और अनंत वीर्य प्रकट हो गए हैं जो द्रव्य कर्म, भाव कर्म और नो कर्म से सर्वथा रहित हो गए हैं उन्हें सिद्ध कहते हैं। ऐसे अनंत सिद्ध परमात्मा लोक के अग्रभाग में विराजित हैं। सिद्ध भगवान का समुदाय ही सिद्धचक्र कहलाता है। यह मंगल देशना आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने प्रगट की। वीणा दीदी, गज्जू भैया, राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री उपदेश में बताया कि सिद्धचक्र विधान में सिद्ध दशा प्रकट करने का विधान अर्थात उपाय बताते हुए सिद्धों का गुणानुवाद किया गया है। ज्ञानी का परम लक्ष्य पूर्ण सुख प्रकट करना है अर्थ अतः उसके हृदय में पूर्ण सुखी अरिहंत और सिद्ध परमेष्ठी के गुणानुवाद के माध्यम से अपने लक्ष्य के प्रति सतर्क रहते हुए अशुभ भावों से सहज बच जाते हैं। सिद्धचक्र विधान से अनेक रोग शारीरिक रोग तो दूर होते हैं जब से आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज धरियाबद संघ सहित पधारे हैं। अब वर्षाकाल तो समाप्त हो गया है किंतु नगर में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के पधारने के बाद से लगातार धार्मिक अनुष्ठान, उपदेश, स्वाध्याय, धर्म के शिक्षण संस्कार शिविरों के माध्यम से सतत धर्म की वर्षा हो रही है। संघ आगमन के बाद 52 साधुओं की उपस्थिति को चिर स्थाई रखने के लिए 52 जिनालय निर्माण का संकल्प नंदनवन, हिमवन विहार कर आचार्य श्री अजित सागर जी स्मृति हेतु चिकित्सा भवन हेतु आचार्य श्री सानिध्य में शिलान्यास हुआ। धार्मिक कार्यक्रमों में समाज के सभी उम्र के लोगों द्वारा शामिल होकर ज्ञान में वृद्धि हो रही है। इसी कड़ी में मूलनायक श्री चंद्रप्रभु का मोक्ष कल्याणक विशेष कार्यक्रमों सहित 6 मार्च को मनाया गया। 7 मार्च से 14 मार्च तक आचार्य श्री वर्धमान सागर जी, मुनि श्री पुण्य सागर जी संघ के 52 साधुओं के मंगल सानिध्य और संहितासूरी पंडित हंसमुख जी, ब्रह्मचारिणी वीणा दीदी के निर्देशन में श्री चंद्रप्रभु जिनालय में सिद्धचक्र मंडल विधान के माध्यम से चयनित सौभाग्य शाली इंद्र परिवारों द्वारा पूजन की जावेगी। 7 मार्च फगुन शुक्ला अष्टमी 24 फरवरी 1969 को आचार्य श्री धर्मसागर जी को आचार्य पद दिया गया। उसी दिन श्री वर्धमान सागर जी सहित 11 दीक्षा हुई। इसी कारण आचार्य श्री धर्म सागर जी का 57 वां आचार्य पदारोहण तथा आचार्य श्री वर्धमान सागर जी का 57 वां संयम दीक्षा वर्ष भक्तिभाव से मनाया जाने के लिए विशेष तैयारी चल रही है। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी परम्परा के पंचम पट्टाधीश होकर 57 वर्ष के संयमी जीवन में 36 वर्षों से आचार्य हैं। आपने अभी तक 113 दीक्षा दी हैं।

भ. चंद्रप्रभु निर्वाण महोत्सव पर लड्डू चढ़ाया

महावीर कुमार सरावगी, संवाददाता

नैनवा जिला बूंदी 6 मार्च। आचार्य 108 सुनील सागर महाराज के परम पावन प्रभावक शिष्य क्षुल्लक सुप्रकाश सागर जी महाराज के सानिध्य में जयपुर रोड पर दिगंबर जैन नेमिनाथ क्षेत्र पर 8:00 बजे नित्य नियम पूजन अभिषेक शांति धारा, भगवान चंद्रप्रभु का निर्वाण लड्डू चढ़ाने का परम सौभाग्य श्रेष्ठी श्रीमान कैलाश कुमार जी शिखर जैन देई वाला परिवार ने प्राप्त किया। 1008 नेमीनाथ भगवान की शांतिधारा करने का सौभाग्य मोहनलाल कमल कुमार मनीष कुमार जॉनी कुमार गोलू कुमार मम्मी कुमार जैन मारवाड़ा ने प्राप्त किया। दिगंबर जैन समाज के प्रवक्ता महावीर सरावगी ने बताया कि इस अवसर पर शैलेश जैन पाटनी बैंक ऑफ बड़ोदा प्रबंधक नाथू लाल देईवाले, कैलाश देईवाले, मोहन मारवाडा, कमल मारवाड़ा, इंद्र जैन, पवन जैन, महावीर सरावगी, प्रवीण सरावगी, महिलाओं में ममता जैन, रेखा जैन, प्रेमलता जैन, रेनू गुडा वाले, अंजू पोदार, सरोज जैन बटावती वाले आदि ने लड्डू चढ़ाने का परम सौभाग्य प्राप्त किया।

प्रथमाचार्य शांतिसागर के जीवन पर आधारित हाउजी प्रतियोगिता सम्पन्न

हाउजी प्रतियोगिता में झलका उत्साह, विजेता किए पुरस्कृत

मदनगंज-किशनगढ़। प्रथमाचार्य शांतिसागर आचार्य पदारोहण शताब्दी महोत्सव के अंतर्गत मुनिसुव्रतनाथ पंचायत के तत्वावधान में मुनिसुव्रतनाथ मंदिरजी में आचार्य शांतिसागर के जीवन पर आधारित हाउजी प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। पंचायत प्रचार मंत्री गौरव पाटनी ने बताया कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला महासभा की ओर से प्रथमाचार्य शांतिसागर के जीवन के प्रेरक प्रसंगों पर आधारित यह हाउजी प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। अध्यक्ष अनीता बाकलीवाल के निर्देशन में सदस्यों ने दीपक के थाल सजाकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ, आचार्य वर्धमान सागर, पद्मावती माता व क्षेत्रपाल बाबा की आरती की। महासभा की सदस्याओं ने भक्तिमय नृत्य की प्रस्तुतियां भी दीं। मंदिर की लाईट डेकोरेशन से सजावट कार्य में रचना गंगवाल, ज्योति पटौदी, प्रियंका सेठी, रेखा बाकलीवाल इत्यादि ने सहयोग किया। अनीता बाकलीवाल ने भजनों की प्रस्तुतियां दीं। श्रावक-श्राविकाओं ने लिए 36 एकासन नियमः प्रथमाचार्य शांतिसागर के जयकारों के साथ हाउजी प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। प्रथमाचार्य के जीवन पर प्रकाश डालते हुए डोली पाटनी व अनीता बाकलीवाल ने हाउजी खिलवाई। इसमें मंजू दोसी, पुष्पा पांड्या, ममता बड़जात्या, रानी झांझरी, अनीता कासलीवाल, शिल्पा पाटनी व गरिमा काला विजय रही। सभी विजेताओं को उपहार दिए गए। हाउजी का समापन आचार्यश्री के उपदेश संयम धारण करो डरो मत से हुआ। अध्यक्ष बाकलीवाल ने बताया कि हाउजी प्रतियोगिता के सफल आयोजन में गौरव पाटनी सहित डॉली पाटनी, अंजू गोधा, मंजू झांझरी, संगीता बाकलीवाल, मीना दोसी, आशा बाकलीवाल का सहयोग रहा। 36 एकासन के नियम लिए आचार्य वर्धमान सागर की प्रेरणा से श्रावक-श्राविकाओं ने वर्ष में 36 एकासन के नियम लिए। कार्यक्रम में पंचायत अध्यक्ष विनोद पाटनी, दिलीप कासलीवाल, सुभाष बड़जात्या, राजेश पांड्या, चेतन प्रकाश पांड्या, पद्म गंगवाल, पवन दोसी, धर्मेन्द्र पाटनी, विजय सेठी, अरूण पाटनी, सुमेर गोधा ने सेवाएं दी।

- शेखर चन्द पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

चिंतामणि रत्न समान मानव पर्याय का प्रतिक्षण अनमोल है, सदैव सकारात्मक रहें, निर्मल परिणामों को बनाए रखें: मुनि संयत सागरजी

पारस जैन 'पार्श्वमणि', संवाददाता कोटा

कोटा (राज.)। मानव जीवन दुर्लभ चिंता मणि रत्न के समान है। बड़े भाग्य से नर तन पाया मनुष्य कुल पर्याय मिली श्री जिनवर के दर्शन करने जिनवाणी की राह मिली। मानव जीवन का प्रत्येक क्षण अनमोल है। सदैव सकारात्मक रहते हुए निर्मल परिणामों को बनाए रखें। संसार के प्राणी मात्र से मैत्री भाव बनाए रखें। उक्त उद्गार मुनि श्री संयत सागर जी महाराज ने आर के पुरम त्रिकाल चौबीसी जैन मंदिर में विशाल धर्म सभा को संबोधित करते हुवे व्यक्त किए।

मंदिर समिति के अध्यक्ष अंकित जैन महामंत्री अनुज गोधा, कोषाध्यक्ष ज्ञान चंद जैन ने बताया कि धर्म सभा में मंगल दीप प्रज्वलन जे के जैन, मनोज जयसवाल, लोकेश जैन, प्रकाश जैन, पदम जैन, सागर चंद जैन ने किया।

धर्म सभा में मंगलाचरण पाठ पारस जैन 'पार्श्वमणि' पत्रकार ने 'मुनि आए नगरी हमारे पावन हो गई ये धरा रे' स्वरचित भजन अपनी सुमधुर आवाज में सुनाकर श्रद्धालुओं को भाव विभोर हो झूमने को मजबूर कर दिया। कार्याध्यक्ष प्रकाश जैन ने बताया कि धर्म सभा का संचालन पंडित रविन्द्र शास्त्री एवं पारस जैन 'पार्श्वमणि' ने कर चार चांद लगा दिए।

मुनि श्री ने आगे कहा कि जीवन में बंधु बहुत बनाए परंतु ऐसा बंधु बनाओ जिससे संसार बंधन से मुक्ति मिल जाए। जीवन में शत्रुता नहीं मित्रता हटाओ, जब मित्रता हट जाएगी तो फिर कोई शत्रुता नहीं बचेगी। संसार परिभ्रमण का मुख्य कारण राग, द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह, माया के बंधन ही है।

संसार में सदैव समीचीन मित्रता रखे। मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे, दिन दुखी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्तोत्र बहे। ये भावना सदैव अंतर्मन में रखनी चाहिए। आगे मुनि श्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि वर्तमान समय में जितने भी आपके मित्र बंधु हैं एक दिन सभी शत्रु हो जाएंगे क्योंकि मानव जीवन में इच्छाएं व आकांक्षाएं अनंत हैं, वो कभी पूरी नहीं हो सकतीं। जीवन में समीचीन मित्रता में समता भाव आ जाता है। जीवन में संत के सानिध्य से मानव भले हो, संत न बनें परन्तु संतोषी तो बन ही जाता है। कहा भी गया है जब आए संतोष धन सब धन धुरी समान। संसार का जितना भी वैभव, संपति, धन, दौलत, सोना, चांदी सब धूल के समान दिखाई देने लग जाते हैं जब संतोष रूपी धन अंतर्मन में समाता है। मंदिर समिति के अध्यक्ष अंकित जैन ने बताया कि आचार्य 108 विशुद्ध सागर जी महाराज के शिष्य मुनिवर 108 संयत सागर जी महाराज ससंघ का दोपहर 2:30 बजे रिद्धि सिद्धि नगर के लिए मंगल बिहार हो गया। मुनिश्री ससंघ रावतभाटा से मंगल पद बिहार करते हुये आर के पुरम जैन मंदिर आए।

जैन दर्शन से शास्त्री (BA) करने हेतु CUET अवश्य दें

जो छात्र और छात्राएं 2th Borad exam, उत्तर मध्यमा, वरिष्ठ उपाध्याय या प्राक्शास्त्री आदि की परीक्षाएं अभी दे रहे हैं और यदि वे जैन दर्शन विषय साथ शास्त्री (BA) Central University, New Delhi से करना चाहते हैं तो वे 22 मार्च 2025 से पहले NTA द्वारा आयोजित CUET प्रवेश परीक्षा के लिए online आवेदन अवश्य कर दें।

यदि 12वीं बिना संस्कृत के हैं तो भी प्रवेश ले सकते हैं।

आवेदन में तीन बातों का विशेष ख्याल रखें

1. अपने अनेक विषय के चुनाव में एक विषय संस्कृत अवश्य रखें।
2. विश्वविद्यालय की Preference list सपेज बनाते समय में उसम Shri Lalbahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi को अवश्य रखें।
3. विषय प्रोग्राम चयन में जैन दर्शन का चयन करें।

प्रवेश संबंधी तथा अन्य अनेक प्रोग्राम संबंधी जानकारी के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.slbsrsv.ac.in अवश्य देखें और उसके अनुसार चलें।

समय सीमा के पहले आप CUET फॉर्म अवश्य भर दें अन्यथा किसी भी केंद्रीय

मैनपुरी में विश्व की सबसे छोटी लड़की 32 वर्षीय महिला ज्योति आमगे जिसकी ऊंचाई 61 सेंटीमीटर है, साधना महोदधि तपाचार्य आचार्य श्री 108 अंतर्मना गुरुदेव प्रसन्न सागर जी महाराज ससंघ दर्शन के लिए पहुंचीं।

प्रसिद्ध समाजसेवी, परोपकारी एवं दानवीर भामाशाह, तीर्थ स्थलों के जीर्णोद्धार, मंदिरों, धर्मशालाओं एवं पुस्तकालयों के निर्माण, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान, महान व्यक्तित्व, अनेक विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करना,
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के वरिष्ठ राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री महेंद्र कुमार जैन जी (चेन्नई) को
रोटरी इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3234 द्वारा
लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
उन्हें भविष्य में और अधिक उपलब्धियां प्राप्त करने की हार्दिक शुभकामनाएं देती है।
भगवान जिनेन्द्र उनके परिवार को आशीर्वाद दें।
गजराज जैन गंगवाल (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
रमेश जैन तिजारिया (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष)
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या (राष्ट्रीय महामंत्री)
पवन जैन गोधा (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
समाज की। समाज द्वारा। समाज के लिए
djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha djainmahasabha digjainmahasabha.org

ज्येष्ठ श्रेष्ठ निर्यापक मुनि श्री योग सागर जी ससंघ का अंकुर कॉलोनी में हुआ मंगल प्रवेश

सागर। संत शिरोमणि आचार्य गुरुदेव श्री विद्यासागर जी महाराज एवं आचार्य श्री समय सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य जीएसटी श्रेष्ठ निर्यापक मुनि श्री 108 योग सागर जी महाराज का मंगल विहार बालक कांप्लेक्स से शाम 4:00 बजे हुआ एवं मुनि संघ का भव्य मंगल प्रवेश 530 बजे श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर अंकुर कॉलोनी में हुआ। रास्ते में मुनि संघ की आरती उतारी गई एवं जगह-जगह पाद प्रक्षालन किया गया। मुनी संघ के मंगल सानिध्य में श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर अंकुर कॉलोनी में प्रातः 8:00 बजे से अभिषेक, शांतिधारा एवं मंगल प्रवचन का सौभाग्य सभी धर्म प्रेमी बंधुओ को प्राप्त होगा। बिहार करने वालों में मंदिर कमेटी अध्यक्ष अशोक जैन पटवारी, मनोज जैन लालो, सुरेंद्र जैन मालथौन, एम सी जैन, सुनील शाहगढ, प्रसन्न जैन, सुकुमाल जैन, अजय सराफ शिवम जैना ग्लास, वीरेंद्र जैन बंडा, प्रवीण जैन बंडा, शायद बड़ी संख्या में पुरुष एवं महिलाएं मौजूद थीं।

समाजसेवा और जनहित के प्रति उत्कृष्ट योगदान के लिए डॉ. मनोज कुमार जैन को 'मानद डॉक्टरेट' की उपाधि

नई दिल्ली। समाज सेवा, जनकल्याण और लोकहित में उनकी अद्वितीय प्रतिबद्धता को मान्यता देते हुए harath Virtual University for Peace and Education ने डॉ. मनोज कुमार जैन को 'मानद डॉक्टरेट' (Honorary Doctorate) की उपाधि से सम्मानित किया है। यह प्रतिष्ठित सम्मान समाज के प्रति उनकी निस्वार्थ सेवा, समर्पण और उत्कृष्ट योगदान का प्रमाण है। इस गौरवपूर्ण अवसर पर डॉ. जैन ने कहा कि यह सम्मान मेरे लिए न केवल गर्व का विषय है बल्कि समाज के प्रति मेरी जिम्मेदारियों को और अधिक बढ़ाने वाला भी है। समाजसेवा का यह सफर मेरे सहयोगियों, समर्थकों और शुभचिंतकों की प्रेरणा और सहयोग से संभव हुआ है। मैं संकल्प लेता हूँ कि भविष्य में भी पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ समाज कल्याण के लिए कार्य करता रहूँगा। डॉ. मनोज कुमार जैन राजनीति, समाज सेवा और उद्यमिता के क्षेत्र में अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए पहचाने जाते हैं। वे वर्तमान में दिल्ली नगर निगम में एलजी द्वारा मनोनीत निगम पार्षद भी हैं। वे शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक उत्थान के विभिन्न अभियानों में सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं और समाज के वंचित वर्गों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। उनकी यह उपलब्धि न केवल उनके व्यक्तिगत प्रयासों की सराहना है, बल्कि समाजसेवा के क्षेत्र में कार्यरत सभी व्यक्तियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनेगी।

डॉ. जैन ने इस सम्मान के लिए Bharath Virtual University for Peace and Education का आभार व्यक्त किया और अपने सभी समर्थकों व शुभचिंतकों को धन्यवाद दिया। उनका यह सम्मान समाज के प्रति उनके समर्पण और भविष्य में उनकी और भी प्रभावी पहल के लिए एक महत्वपूर्ण मान्यता है।

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. पता नहीं क्या कारण है कि घर से बाहर तो मैं खुश रहती हूं मगर घर में प्रवेश करते ही चक्कर आने लगते हैं - जिनमती जैन, दिल्ली

उत्तर - आप किसी अच्छे वास्तुविद से अपने मकान का अवलोकन करायें तथा यथासम्भव उपाय करें, निश्चित रूप से आपके व्यवहार में फर्क पड़ेगा।

प्रश्न 2. पिछले चार साल से एक लड़के के सम्पर्क में हूं, मगर मुझे लगता है कि वह मुझे धोखा दे रहा है। मुझे क्या करना चाहिये - अनाम, दिल्ली

उत्तर - आप जल्द से जल्द उस लड़के से दूरी बना लें तथा पूरी सच्चाई अपने माता-पिता को बता दें। श्री चन्द्रप्रभु चालीसा रोजाना पढ़ें तथा शुक्रवार को मिश्री दान करें। 2 मोर पंख अपने कमरे में रखें।

प्रश्न 3. कुंडली में मंगल का क्या योगदान होता है और क्या मंगल ग्रह वक्री भी होता है - प्रेम, रांची

उत्तर - जातक को हिम्मत देने का कार्य मंगल ही करता है। नवग्रहों में मंगल को सेनापति का दर्जा मिला है, मगर अगर मंगल नीच का होता है तो व्यक्ति को क्रोध बहुत आता है और मंगल ग्रह भी कभी-कभी वक्री हो सकता है।

प्रश्न 4. मेरे लिये कौन सा रंग लाभदायक है, क्या मैं पीला रंग धारण कर सकता हूँ - मंगल सेन, दिल्ली

उत्तर - मंगल सेन जी, आपकी कुंडली में चन्द्रमा नीच का बैठा हुआ है और उसकी दशा भी चल रही है। आप सफेद रंग धारण करें, पीला रंग धारण ना करें।

गुरु जी से संपर्क सूत्र- 9990402062, 826755078

राष्ट्रीय स्तर पर मुनि, आर्यिका, त्यागी, सुरक्षा महा कमेटी का निर्माण करें

एम.सी. जैन, पत्रकार, संवाददाता

हाल ही में आचार्य सुनील सागर जी महाराज जी की परम शिष्या आर्यिका श्रुतमती माताजी गुजरात-दाहोद के पास एक कार ने टक्कर मारने से उसी जगह पर ही आकस्मिक समाधिमरण हुआ, इस तरह राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, बिहार, असम में भी हादसे हुये हैं या कई स्थानों पर जैन मुनि तथा साध्वियों को जान बूझकर भी कुचले जाने के समाचार हैं। सत्य, शांति और अहिंसा के मूर्तिमंत प्रतीक जैन मुनि तथा आर्यिकाएं होती हैं, किंतु इस तरह का दुर्भाग्यपूर्ण जैन विरोधी, मूर्ख लोग, हीनता का आचरण अत्यंत दु:खद है।

जैन समाज को जाग्रत होना होगा, जैन अहिंसा सिद्धांत का पालन परिपूर्ण रुप से करते हैं, इसका मतलब यह नहीं कि हमें कोई भी आंख दिखाने का प्रयास करे, हम भी शांति से नहीं बैठ सकते। आंख को आंख दिखाने की हिम्मत करनी होगी। अहिंसा का मतितार्थ - कदापि दुबला, कमजोर नहीं है। अहिंसा वीरों का धर्म है, अहिंसा और शांति में क्रांति है। इस पर गौर करना आवश्यक है। जैन मुनि, साधु, आर्यिकाएं सदैव विचरण करते हैं, एक स्थान पर कभी रुकते नहीं। प्रथमाचार्य शांतिसागर जी महाराज जब हैदराबाद संभाग से निकले तो स्वयं निजाम सरकार और बेगम दर्शन को पधारे, पूरा नग्न रुप, पांव में कुछ नहीं, केवल पिच्छी और कमंडलु देखकर दंग रह गए और महान त्याग और तपस्या की बखान करने लगे। समूचे भारतवर्ष में दिगम्बर जैन मुनि हजारों वर्षो से नग्न विहार कर रहे हैं। दुर्भाग्यवश अनेक स्थानों पर जैन परिवार कम मात्रा में है, जैन समाज यादि घुल मिलकर नहीं रहता तो जोरहट (आसाम) जैसी समस्याएं निर्माण हो सकती हैं।

उत्तर-पूर्वी राज्यों में अन्य समाज, जैन परम्परा से अनभिज्ञ होने के कारण भ्रम की स्थिति निर्माण होती है। आसाम राज्य में जैन धर्म प्रचार प्रसार अत्यधिक आवश्यक है। सभी समाचार पत्रों में नियमित लेख, विज्ञापन प्रसिद्ध करना चाहिये। भा. दि. जैन महासभा को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आचार्य श्री दयासागर जी महाराज जी, डिब्रूगढ़ से सिलापथार की ओर जा रहे थे तब अनेक रुकावटें आई, आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज जी को 2006 में सिलचर में ऐसी स्थिति निर्माण की गई, रात्रि में ही पलायन करना पड़ा। मेरा समस्त जैन समाज से, जैन मुनि, साधु, आर्यिकाएं एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा से अनुरोध है कि राष्ट्रीय स्तर पर 151 सदस्यों की कमेटी निर्माण कर मुनि, आर्यिका, त्यागी, राष्ट्रीय सुरक्षा समिति की घोषणा करें। भारत में 29 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं, कुल 37 राज्य हैं प्रत्येक राज्य से 4 अनुभवी, कुशल सदस्य नियुक्त करें। कड़े कदम उठाना समय का तकाजा है।

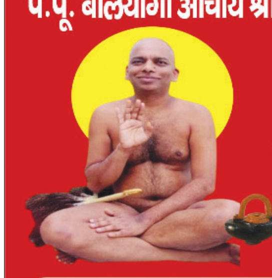

॥ श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम ॥
प.पू. बुन्देलखण्ड केसरी, उपसर्ग विजेता आचार्य श्री 108 सिद्धान्तसागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य
प.पू. बालयोगी आचार्य श्री 108 सौभाग्यसागर जी महाराज के पावन सानिध्य में
अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद् (पंजी.) का
अष्टम राष्ट्रीय अधिवेशन

18 मार्च 2025 दिन मंगलवार
समय प्रात: 9:00 से 12:00 बजे तक
स्थान : श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर एन-10, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, दिल्ली

19 मार्च 2025 दिन बुधवार
अहिंसा स्थल, अक्षरधाम, इंडिया गेट, कुतुब मीनार, लोट्स टैम्पल, दादा वाड़ी, बिरला मंदिर आदि
ऐतिहासिक इमारतों का वास्तु अवलोकन

विशेष: आदिनाथ चैनल के द्वारा देश की राजधानी दिल्ली में पधारने पर सभी विद्वानों का स्वागत एवं सम्मान

आप सभी सादर आमंत्रित है।
-: गरिमामयी उपस्थिति :-

जो जैन ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुविद् अधिवेशन में शामिल होना चाहें वे कृपया श्री रवि जैन गुरुजी जैन ज्योतिषाचार्य दिल्ली मो. 8826755078 पर सम्पर्क करें!

निवेदक : आर.पी. जैन अध्यक्ष, योगेन्द्र जैन उपाध्यक्ष, दीपेन जैन महामंत्री
नवीन जैन सहमंत्री, राजकमल सरावगी कोषाध्यक्ष एवं समस्त कार्यकारिणी
आयोजक : जैन सभा, युसुफ सराय-ग्रीन पार्क, ग्रीन पार्क, दिल्ली

सबसे क्षमा क्षमा वीरस्य भूषणम् सबको क्षमा

Dolphin Waterproofing
For Your New & Old Construction
आधुनिक टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें, सीलन, लीकेज व गर्मी से राहत एवं बिजली के बिल मे भारी बचत करें।
छत व दीवारों का बिना तोडफोड के सीलन का निवारण
Rajendra Jain
Dr. Fixit Authorised Project Applicator 80036-14691
116/183 Agarwal Farm opp. D Mart Mansoravar Jaipur

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सम्पादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

परामर्शक सदस्य
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड
मो. 08107581334

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233, 9369025668
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क- 7607921391, 9415008344,7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल jaingazette2@gmail.com पर भेजें

केंद्र सरकार देगी बड़ौत हादसे के मृतकों के स्वजन को दो-दो लाख

28 जनवरी को लड्डू निर्वाण महोत्सव के दौरान ढह गया था मचान

पुनीत जैन

बड़ौत। शहर के दिगम्बर जैन डिग्री कॉलेज के मैदान पर 28 जनवरी को लड्डू निर्वाण महोत्सव के दौरान हुए हादसे में मृतकों के स्वजन को केंद्र सरकार की ओर से दो-दो लाख और घायलों को 50-50 हजार रुपये दिए जाएंगे। सरकार की ओर से प्रशासन से संबंधित लोगों की जानकारी मांगी गई है। हालांकि अभी प्रदेश सरकार की ओर से मुआवजा मिलेगा या नहीं, इसे लेकर कोई हलचल नजर नहीं आ रही है।

शहर के दिगंबर जैन डिग्री कालेज के मैदान पर 28 जनवरी को लड्डू निर्वाण महोत्सव के दौरान लकड़ियों का मचान भरभराकर ढह गया था, 'जिसके मलबे में दबकर सात श्रद्धालुओं की मौत हो गई थी, जबकि 50 लोग घायल हो गए थे, जिनमें 15 पुलिसकर्मी भी शामिल थे। बाद में दो और श्रद्धालुओं ने अस्पताल में उपचार के दौरान दम तोड़ दिया था। जैन समाज के लोगों और जनप्रतिनिधियों ने पीड़ितों को मुआवजा दिए जाने की मांग उठाई थी। केंद्र सरकार ने अब मृतकों के स्वजन को दो-दो लाख रुपये और घायलों को 50-50 हजार रुपये का मुआवजा दिया जाना तय किया है। इस संबंध में प्रशासन से सूची आदि की जानकारी भी मांगी है ताकि मुआवजा धनराशि वितरण की कार्रवाई को आगे बढ़ाया जा सके। एडीएम पंकज वर्मा ने बताया कि केंद्र सरकार की ओर से मृतकों के स्वजन को दो-दो लाख रुपये और घायलों को 50-50 हजार रुपये दिए जाने की तैयारी चल रही है। इस संबंध में सूचना भेज दी गई है। उधर पीड़ित लोग कई दिन पहले लखनऊ में सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव से मिले थे। अखिलेश यादव ने पार्टी की ओर से मृतकों के स्वजन को दो-दो लाख रुपये का मुआवजा दिए जाने की घोषणा की थी।

नाम के भूखे लोग काम के नहीं होते हैं
जैन गज़ट शिकायत 9415008344 जैन गज़ट

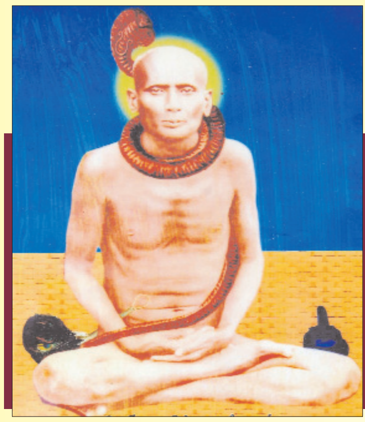

प्रथमाचार्य शांतिसागर व्रत

परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य 108 श्री शांतिसागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव (2024-25) के उपलक्ष्य में परम पूज्य पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज द्वारा सम्पूर्ण जैन समाज को संयम की प्रेरणा हेतु प्रदान किया गया एक व्रत का संकल्प

आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव
13 अक्टूबर 2024 - 3 अक्टूबर 2025

36 एकासन का नियम

प्रतिमाह कम से कम एक या अधिकतम तीन

जाप्य: ऊँ हूँ प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर नमः।

पूजन: प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की पूजा

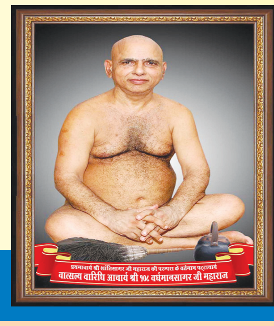

पूजन: प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की पूजा

प्रेरणा

सोहनलाल कासलीवाल
अध्यक्ष खण्डेलवाल दिग. जैन समाज पाण्डिचेरी

रिखबचन्द पाटोदी
अध्यक्ष दिग. जैन समाज पाण्डिचेरी

सोहनलाल पहाड़िया
पूर्व अध्यक्ष दिग. जैन समाज पाण्डिचेरी

जितना जिनका प्रत्येक कार्य अदभुत आकर्षण व महान व्यक्तित्व है, जिनका नाम स्मरण करते ही हृदय भक्ति से भर जाता है, उन आचार्य श्री की गौरव गाथा तो उनकी मुखाकृति पर ही अंकित थी। लिखने की चीज भी नहीं यह तो मनन व अध्ययन की चीज है। काश उन्हें हम ठीक-ठीक समझ पाते।

सर्पराज का उपसर्ग जिनकी तपस्या में खलल न डाल सका, असंख्य चीटियों का घंटों काटना, जिनके लिये मानसिक अशान्ति का कारण न बन सका, सिंह निष्क्रीड़ित व्रत के लम्बे उपवास के समय ज्वर का प्रकोप जिनको शिथिलाचार की ओर ठेल न सका, कंचन और कामिनी जैसे मोहक पदार्थ जिनके संयम साधना में बाधक न बन सकें उन योगिराज की आत्मा कितनी महान थी, यह सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता हैं।

- शेखरचंद पाटनी

दानवीर नगरी पांडिचेरी के पुण्यार्जक/नमनकर्ता

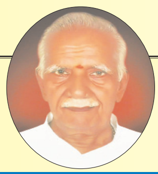
स्व. श्री नथमल जैन

गौतमचंद विशाल सेठी (गौतम ज्वैलर्स)

श्रीमती मनफूल देवी जैन

श्री सन्मति विजया एवं रिद्धी सिद्धी महिला मण्डल

रमेश तिजारिया, जयपुर

मदनलाल राजेन्द्र अरविन्द, मनोज सुनील कासलीवाल

सुधान्शु कासलीवाल जयपुर

सोहनलाल विदीत कासलीवाल
सोहनलाल पहाड़िया
मनीष मार्बल
दीप ज्वेलर्स (दीप कुमार बज)
चिरंजीलाल हेमंत शरद कासलीवाल
मनीष प्रणय सेठी
बुद्धराज, प्रसन्ना, बिमल कासलीवाल

रिखबचंद पाटोदी
शांतिलाल लूणकरण रेशमा पाटनी
गजराज भरत सुशील कोठारी
चम्पालाल निरंजन कासलीवाल
धर्मचन्द शकुन्तला जैन व्रती श्रावक
आसूलाल भागचन्द कासलीवाल
गणपत कोठारी

हुलास चन्द सबलावत परिवार, रेडिप्रिन्ट जयपुर
नवरतमल पाटनी अष्टम प्रतिमाधारी जयपुर
संतोष, अजय, अनुज, आशीष, अतिशय, अनवीर
श्री दिगम्बर जैन समाज सेलम
विजयकुमार कासलीवाल कुचील वाले किशनगढ़
अशोक चूड़ीवाल बरपेटा रोड, आसाम
श्रीमती सरोजदेवी पांड्या, गुवाहाटी

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92
Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on Every Monday, wednesday and thursday
डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh, Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233, 7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)
....
....
....

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-, दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।